हुबली में
प्रतिष्ठा सम्पन्न

हॉस्पेट में आराधना भवन के
उद्घाटन पर प्रवचन फरमाते
पूज्यश्री

बल्लारी में दीक्षा विधि
करवाते पूज्य श्री

सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

# जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

▪ वर्ष : 11 ▪ ▪ अंक : 10 ▪ ▪ 5 जनवरी : 2015 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

ॐ ह्रीँ अर्हं नमः

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

।। दादा गुरूदेव श्री जिनदत्त चन्द्र-कुशल-चन्द्रसूरि सद्गुरूभ्यो नमः ।।

।। गणनायक श्री सुखसागर-जिनहरि-जिनकांतिसागरसूरि गुरूभ्यो नमः ।।

# दक्षिण प्रदेश के
# श्री तिरुपुर नगरे

**नवनिर्मित विशाल शिखरबद्ध श्री पार्श्व जिन मंदिर व**
**श्री जिनकुशलसुरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा निमित्ते**

महोत्सव मुहूर्त्त व
निश्रा प्रदाता
पूज्य उपाध्याय मरुधरमणि
**श्री मणिप्रभसागरजी**
**म. सा.**

# सादर आमंत्रण

**पावन प्रतिष्ठा दिवस**
**दि. 26.1.2015**
**माघ सुदि 7, सोमवार**

मार्गदर्शन व कुशल संचालन
सिरोही ( राज. ) निवासी शासनरत्न
**श्री मनोजकुमार बाबुमलजी हरण**

आप सर्व से निवेदन कि इस अवसर पर
परिवार सहित जरूर पधारें। शासन की शोभा बढ़ावें

**निमंत्रक - श्री पार्श्वकुशल जैन सेवा ट्रस्ट, तिरुपुर ( तमिलनाडु )**

## आगम मंजूषा

आचार्य भद्रबाहुसूरि

जह जह सुज्झइ सलिलं, तह तह रूवाइं पासई दिट्ठी।
इय जह जह तत्तरुई, तह तह तत्तागमो होइ॥
-आवश्यक निर्युक्ति ११६३

जल ज्यों-ज्यों स्वच्छ होता है त्यों-त्यों उसमें प्रतिबिंबित रूप स्पष्टतया दिखने लगता है। इसी प्रकार अन्तर में ज्यों-ज्यों तत्त्व रूचि जाग्रत होती है, त्यों-त्यों आत्मा तत्त्वज्ञान प्राप्त करता जाता है।

## पूज्यश्री की निश्रा में कार्यक्रम

- ता. 21 जनवरी 2015 ईरोड में अंजनशलाका प्रतिष्ठा
- ता. 26 जनवरी 2015 तिरूप्पुर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा
- ता. 2 फरवरी 2015 कोयम्बतूर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा
- ता. 27 फरवरी 2015 कन्याकुमारी में अंजनशलाका प्रतिष्ठा
- ता. 7 मार्च 2015 तिरूनलवेली में नवपद पट्ट प्रतिष्ठा
- ता. 25 अप्रेल 2015 चेन्नई में माता पुत्र की भागवती दीक्षा
- ता. 26 अप्रेल 2015 चेन्नई में अंजनशलाका प्रतिष्ठा
- ता. 29 मई 2015 सिंधनूर में भागवती दीक्षा
- ता. 25 जुलाई 2015 पूज्यश्री का रायपुर नगर में चातुर्मास हेतु प्रवेश

## अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. नवप्रभात | उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म. | 04 |
| 2. गुरुदेव की कहानियाँ | उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म. | 05 |
| 3. प्रीत की रीत | साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. | 06 |
| 4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव | उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म. | 08 |
| 5. श्रमण चिंतन | मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. | 10 |
| 6. विहार डायरी | उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म. | 12 |
| 7. कैसे रुके दुर्घटनाऐं | उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म. | 15 |
| 8. मेरी अनुभूति | साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. | 16 |
| 9. तखतमलजी सालेचा एक उदारदिल श्रावक | साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. | 18 |
| 10. एक अपूरणीय क्षति | साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. | 20 |
| 11. चतुर्भंगी का चमत्कार | मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. | 28 |
| 12. पंचांग | मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. | 29 |
| 13. समाचार दर्शन | संकलन | 30 |
| 14. जहाज मंदिर पहेली 103 का उत्तर | | 42 |
| 15. जहाज मन्दिर पहेली-105 | मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. | 43 |
| 16. जटाशंकर | उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म. | 46 |

# जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**


वर्ष : 11 अंक : 10 5 जनवरी 2015 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन



जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है


### सदस्यता शुल्क

| | |
|---|---|
| संस्था संरक्षक | : 21,000 रूपये |
| मानद् संरक्षक | : 11,000 रूपये |
| 15 वर्षीय सदस्यता | : 2500 रूपये |
| 12 वर्षीय सदस्यता | : 2000 रूपये |
| 6 वर्षीय सदस्यता | : 1000 रूपये |
| त्रिवार्षिक सदस्यता | : 500 रूपये |
| वार्षिक सदस्यता | : 200 रूपये |

### विज्ञापन सहयोग

| | |
|---|---|
| अंतिम कवर पृष्ठ | : 15,000 रूपये |
| द्वितीय कवर पृष्ठ | : 11,000 रूपये |
| तृतीय कवर पृष्ठ | : 9,000 रूपये |
| अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन | : 7,000 रूपये |
| रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ | : 3,500 रुपये |
| सामान्य पूरा पृष्ठ | : 3,000 रुपये |
| सामान्य आधा पृष्ठ | : 1500 रुपये |

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

### सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक


श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर ( राज. )
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

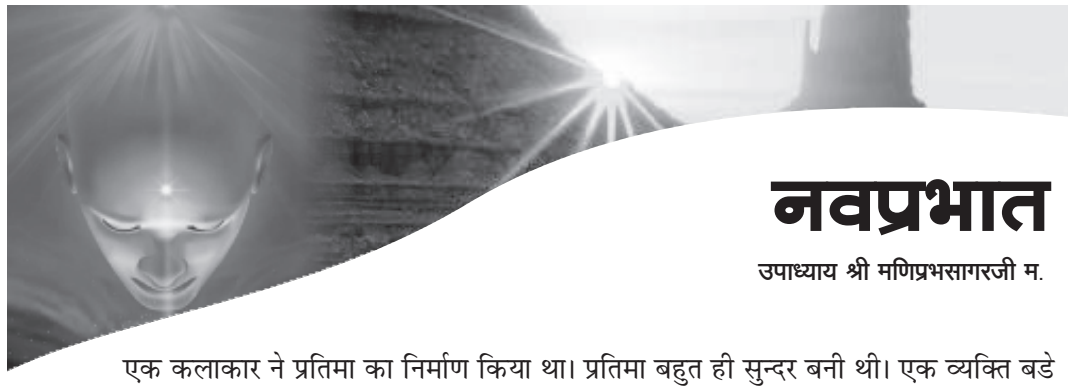

# नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

एक कलाकार ने प्रतिमा का निर्माण किया था। प्रतिमा बहुत ही सुन्दर बनी थी। एक व्यक्ति बडे ध्यान से उस प्रतिमा का निरीक्षण कर रहा था।

कलाकार ने पूछा- कैसी बनी है प्रतिमा! कोई कमी तो नहीं रह गई है। आप जिस ढंग से प्रतिमा का अवलोकन कर रहे हैं, उससे ज्ञात होता है कि आप एक अनुभवी पारखी आदमी है। इस प्रतिमा के संदर्भ में कोई सुझाव हो तो बतायें।

उस व्यक्ति ने कहा- प्रतिमा तो बहुत सुन्दर बनी है। पर इसका दायां गाल थोडा ज्यादा उपसा हुआ है। थोडा कम करेंगे तो प्रतिमा सर्वथा निर्दोष हो जायेगी।

सुनकर कलाकार मुस्कुराया। उसने उसी समय छैनी और हथोडा हाथ में लिया। और दांयें गाल को ठीक करने का दिखावा किया। सफेद चूरा थोडा नीचे गिरा।

कलाकार ने पूछा- अब कैसी लग रही है!

वह व्यक्ति बोला- अब एकदम बराबर दिख रही है।

उसके शब्दों में अपने द्वारा प्रतिमा ठीक करवाने का अहंकार बोल रहा था।

कोई व्यक्ति जब अपनी बात कर अपनी गलती को सुधारता है, तो कहने वाले का अहंकार सिर चढ कर बोलता है। सच तो यह है कि दूसरों की गलती ढूंढने में आदमी को रस है। वह हर वस्तु में गलती निकाल सकता है।

कलाकार ने कहा- महानुभाव! मैं तुम्हें एक बात पूछना चाहता हूँ।

प्रतिमा तो वही है। जो पहले थी। तुमने उसे सुधारने का कहा। मैंने सुधारने का नाटक किया। हाथ में हथोडा भले लिया। पर प्रतिमा को छुआ भी नहीं। बंद मुट्ठी में मैं चूरा लेकर चढा था। उसे गिराया। जिसे देख कर तुम समझे कि मैं तुम्हारे कहे अनुसार ठीक कर रहा हूँ। तुम संतुष्ट हुए।

मेरे मित्र! तुम बताओ कि वही प्रतिमा अब तुम्हें ठीक कैसे लग रही है!

यह उदाहरण हमारे चित्त का प्रतीक है। गलती हो, न हो, पर गलती निकालने की प्रवृत्ति रूग्ण मानसिकता का प्रतिबिम्ब है। और इसी से आदमी जीवन को दु:खमय बनाता है।

अपने दोषों का अवलोकन करके सुधारने का प्रयास करने में ही जीवन की सार्थकता है। और इसी से मन निर्विकार परमात्म स्वरूप का प्राप्त हो सकता है।

गुरूदेव की कहानियाँ

2.

# रोहिणेय चोर

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.

(गतांक से आगे)

''देवताओं की आँखें कभी झपकती नहीं, उनके पैर जमीन पर पड़ते नहीं, वे हमेशा चार अंगुल ऊँचे अधर रहते हैं, उनके गले में झूलती पुष्पमाला कभी मुरझाती नहीं।

उसने देवियों की ओर देखकर सोचा- अरे! भगवान महावीर तो कहते हैं कि देवताओं की आँखें कभी झपकती नहीं, लेकिन इन देवियों की आँखें झपक रही हैं और मेरी पलकें भी झपक रही हैं। इनके पैर तो पृथ्वी पर टिके हैं।

ये देवियाँ नहीं हो सकती, न मैं देव हूँ, मुझे तो इसमें कोई षड्यंत्र दिखाई दे रहा है। मुझे लगता है कि यह सारी व्यवस्था अभयकुमार की है। वह सावधान हो गया।

उसने मुस्कराकर उत्तर दिया- हाँ देवी! मैंने पूर्वभव में बहुत दान दिया है, बहुत लोगों को धर्मकार्य में लगाया है, मैंने मन्दिर, धर्मशालाएं, उद्यान आदि बनाकर खूब पुण्य कमाया है।

देवियाँ वहाँ से रवाना हुई। अभयकुमार ने जब ये बात सुनी तो उसने सिर पकड़ लिया कि वास्तव में रोहिणेय को कोई नहीं पकड़ सकता। उसने यह योजना इसलिए बनाई थी कि जब देवी उसे पूर्वजन्म का हाल पूछेगी तो वह अपने पूर्वजन्म का सारा कच्चा चिट्ठा खोल देगा और उसे गिरफ्तार कर लिया जायेगा। परन्तु उसकी योजना असफल हुई। रोहिणेय को छुट्टी दे दी गई। रोहिणेय मुस्कराता हुआ वहाँ से रवाना हुआ।

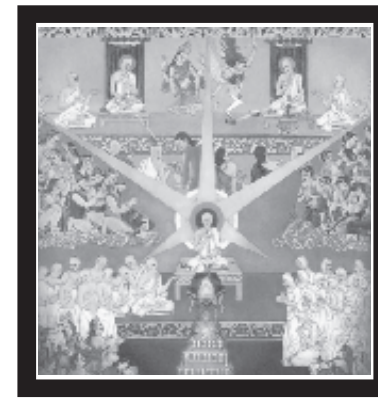

उसके मन में चिन्तन चल रहा था कि अहा! आज तो मैं निश्चित ही पकड़ा जाता किन्तु प्रभु महावीर के वचनों ने मुझे बचा लिया। मैं उस रोज उन वचनों को नहीं सुनता तो आज मैं जेल में होता, न जाने मुझे क्या सजा होती?

प्रभु महावीर के प्रति उसकी श्रद्धा बढ़ने लगी। उसका चिन्तन आगे चला- भगवान के वे वचन सिर्फ एक बार मेरे कानों में पड़े तो मेरी रक्षा हो गई, यदि मैं नित्य उनके वचन सुनूं तो...!

उसके कदम प्रभु के समवशरण की ओर बढ़ने लगे। उसके हृदय में अब पश्चात्ताप की अग्नि भी जल रही थी। वह अपने किए पर पछता रहा था।

समवशरण में प्रभु की देशना सुनी। प्रभु ने मानव-जीवन की महत्ता बताते हुए उसे सफल बनाने की प्रेरणा दी।

रोहिणेय के रोम-रोम में प्रभु के वचन उतरने लगे। उसने अपनी आप बीती सुनाते हुए निवेदन किया- प्रभो! मैंने आज तक सिर्फ अधर्म-कार्य ही किए हैं। अब मैं आपके चरणों की सुखद शीतल छांव में विश्राम पाना चाहता हूँ।

प्रभु ने उसे दीक्षित कर श्रमणसंघ में सम्मिलित कर लिया। अभयकुमार ने अक्षतों से बधाया।

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

# श्री चन्द्रप्रभ स्तवन विवेचन

बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

औपशमिक भाव वह है जो उपशम से पैदा होता है। जब सत्तागत कर्म का उदय बिल्कुल रूक जाता है, तब औपशमिक भा होता है। जैसे कचरा नीचे बैठ जाने पर पानी स्वच्छ प्रतिभासित होता है।

क्षायिक भाव अर्थात् क्षय से उत्पन्न! यह आत्मा की वह परम विशुद्ध अवस्था है जो समस्त कर्म क्षय होने पर वैसे ही प्रकट होता है जैसे सारा कचरा बाहर निकल जाने पर पानी!

क्षायोपशमिक भाव वह है जिसमें क्षय और उपशम दोनों होते हैं। कर्म के एक अंश का उदय सर्वथा रूक जाने पर और दूसरे अंश का प्रदेशोदय द्वारा क्षय होते रहने पर यह भाव प्रकट होता है। इसे कोदों के उदाहरण से समझे। कोदों को धोने के बाद जैसे उनकी मादक शक्ति कमजोर हो जाती है। वैसे ही इसमें भी आत्मा की विशुद्धि मिश्रित है।

औदयिक भाव वह है जो उदय से पैदा होता है। उदय एक प्रकार का मालिन्य है जो विपाकानुभवन से वैसे ही होता है जैसे मल के मिल जाने से जल मलीन हो जाता है।

पारिणामिक भाव द्रव्य के अस्तिव से अपने आप प्रकट होता रहता है। संसारी हो या मुक्ति के जीव इन पाँच भावों में से आत्मा में कोई न कोई भाव तो रहेगा ही। मुक्ति के जीवों में क्षायिक और पारिणामिक दो ही भाव होते है। और संसारी आत्मा में कोई तीन वाला, कोई चार भाव वाला तो कोई पाँच भाव वाला होता है पर दो भावों वाला कोई नहीं होता है। जब जीव को देव, गुरू, धर्म के प्रति एवं तीर्थंकर प्ररूपित वाणी पर गहरी आस्था जम जाती है तभी सम्यक्त्व प्रकट होता है। शास्त्रानुसार जब सम्यक्त्व प्रकट होता है तब नैगम नय स उत्सर्ग भाव सेवा है। सम्यक्त्व की प्राप्ति के बाद जब जीव भावमुनि पद को पाकर आत्म सत्ता के प्रकाश को पा लेता है, उसी में रमणता और तल्लीनता की स्थिति पैदा हो जाती है जब उपादान का यानि चेतना का सतत स्मरण रहने से आत्मा अपना आलंबन ले लती है, यह संग्रह नय से उत्सर्ग भाव सेवा है।

सम्यक्तव पाने के बाद जीव किसी भी स्थिति में रहेगा परंतु अपने का विस्मृत करके नहीं रहेगा। वह वैसा ही संसार में व्यवहार करेगा जैसा एक धायमाता का व्यवहार होता है। धागा पिरोई सुई जैसे खो नहीं सकती वैसे ही सम्यक्त्वी आत्मा भी भव भ्रमण कितना ही कर ले पर उसे खतरा नहीं हो सकता। स्वयं की चेतना के प्रति समर्पण उसका बना रहेगा। सम्यक्त्व की संक्षिप्त परिभाषा यही है कि अपन प्रति जागरूक रहना। सम्यक्त्वी की क्रियाऐ आत्मानुशासन द्वारा होती है। आरोपित अनुशासन में कमियाँ होती है। आत्मानुशासन में खामियों का कोई अवकाश नहीं होता। चेतना का स्मरण जागरूकता का और जागरूकता आत्मानुशासन को जन्म देती है।

**ऋजुसूत्रे जे श्रेणी पदस्थे, आत्मशक्ति प्रकाशेजी।**
**यथाख्यात पद शब्द स्वरूपे**
**शुद्ध धर्म उल्लासेजी, श्री, ।।७।।**

क्षपक श्रेणि में जो आत्मशक्तियाँ प्रकट होती है, वह ऋृजुसूत्र नय की अपेक्षा से उत्सर्ग भाव सेवा है और यथाख्यात क्षायिक चारित्र के प्रकटीकरण के बाद जो अकषायी समाधि का शुद्ध स्वरूप प्रकट होता है, वह शब्द नय की अपेक्षा से उत्सर्ग भाव सेवा है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी समाधि दक्षा में प्राप्त आनंद की दशा का विवेचन कर रहे हैं। वीतरागता को उपलब्ध चेतना को जिस अखंड और अनूठे आनंद की प्राप्ति होती है वह

शब्दों से नहीं अनुभव से जानी जाती है। प्रस्तुत पद्य में क्षपक शब्द का प्रयोग हुआ है। क्षपक शास्त्रीय शब्द है। इसे समझें। जो आत्माऐं मोक्षभिमुख है, वे विशिष्ट आत्माऐं कहलाती है। मोक्षाभिमुखता सम्यग्दृष्टि से प्रारंभ होती है और सर्वज्ञता की प्राप्ति अंतिम चरण है। सम्यग्दृष्टि से सर्वज्ञता की प्राप्ति के बीच जो पर्याय है, उसके दश विभाग है। इनमें पूर्व की अपेक्षा क्रमशः उत्तर अवस्था में परिणामों की विशुद्धि अधिक होती है। परिणामों की विशुद्धि जितनी अधिक होगी, कर्मनिर्जरा का अनुपात भी उतना ही अधिक होगा। सबसे कम कर्मनिर्जरा सम्यग्दृष्टि की और सबसे अधिक सर्वज्ञ की होती है। विशिष्ट आत्माओं के दश विभाजन इस प्रकार है-

. प्रथम अवस्था- मिथ्यात्व से हटकर सम्यग्दृष्टि की भुमिका में प्रवेश करना।

. दूसरी अवस्था- जिसमें अप्रत्याख्यानावरण कषाय के क्षयोपशम से अल्पांश में विरति प्रकट होती है, वह श्रावक की अवस्था।

. तीसरी अवस्था- जिसमें प्रत्याख्यानावरण कषाय के क्षयोपशम से सर्वांश में विरति प्रकट होती है, वह श्रमण अवस्था।

. चौथी अवस्था- जिसमें अनंतानुबंधी कषाय के क्षय करने योग्य विशुद्धि प्रकट होती है, वह अनंत वियोजक अवस्था।

. पाँचवीं अवस्था- जिसमें दर्शन मोह को क्षय करने योग्य विशुद्धि प्रकट होती है, वह दर्शन मोह क्षपक अवस्था।

. छठीं अवस्था- जिस अवस्था में मोह की शेष प्रकृतियों का उपशम चालु हो, वह उपशमक अवस्था।

. सातवीं अवस्था- जिसमें उपशम पूर्ण हो चुका हो, वह उपशान्त मोह अवस्था।

. आठवी अवस्था- जिसमें मोह की शेष प्रकृतियों का क्षय चालु हो वह क्षपक अवस्था।

. नौवीं अवस्था- जिसमें क्षय पूर्ण हो चुका हो, वह क्षीण मोह अवस्था।

. दशवीं अवस्था- जिसमें सर्वज्ञता प्रकट होती है, वह अवस्था।

आत्मा के विशिष्ट विभाजन के दृष्टिकोण से क्षपक आत्मा की आठवीं अवस्था है। इसमें मोह कर्म की प्रकृतियाँ क्षय की ओर अग्रसर होने से आत्मा समाधि रस में डूबने की तैयारी में होती है।

पद्य के उत्तरांश में यथाख्यात चारित्र शब्द का प्रयोग हुआ है। इस शास्त्रीय शब्द का विवेचन समझे बिना हम इस अवस्था के आनंद की कल्पना नहीं कर सकते।

शास्त्रों में पावँ प्रकार के चारित्र का वर्णन उपलब्ध होता है। सामाजिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र, परिहार विशुद्धि चारित्र, सूक्ष्म संपराय चारित्र और यथाख्यात चारित्र।

. सामायिक चारित्र- अशुद्ध प्रवृत्तियों का त्याग कर संपूर्ण सम भाव में रहना सामायिक चारित्र है।

. छोटी दीक्षा के बाद विशिष्ट श्रुत का अभ्यास कर चुकने पर विशेष शुद्धि के निमित्त जीवन पर्यन्त के लिये पुनः जो दीक्षा ली जाती है, जिसे बडी दीक्षा भी भी कहते है, अर्थात् प्रथम ली हुई दीक्षा में दोषापत्ति आने से उसका छेद करके फिर नये सिरे से जो दीक्षा का आरोपण किया जाता है, उसे छेदोपस्थापनीय चारित्र कहते हैं।

. जिसमें विशिष्ट प्रकार के तप प्रधान आचार का पालन किया जाता है, वह परिहार विशुद्धि चारित्र है, जिसमें क्रोध आदि कषायों का उदय नहीं होता सिर्फ लोभ अति सूक्ष्म अंश में रहता है, वह सूक्ष्म संपराय चारित्र कहलाता है।

. जिसमें कषाय का अंश भी निःशेष हो जाता है, वह यथाख्यात अर्थात् वीतराग चारित्र है। अध्यात्म जगत का यह अंतिम और पूर्ण अध्याय है। इस अवस्था में समस्त असमाधि दूर हो जाती है। चेतना अव्यथ हो जाती है। चित्त पूर्ण निर्मल हो जाता है। घटनाऐं तो घटती है पर वे घटनाऐं सोते व्यक्ति के समान प्रभावित नहीं करती। घटनाओं को मात्र वह जानता है, भोगता नहीं।

(क्रमशः)

संस्मरण

34

# ऐसे थे मेरे गुरुदेव

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

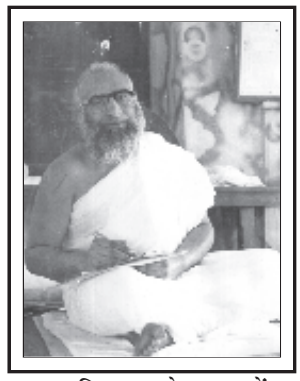

लगभग 65 वर्ष पहले की यह घटना है। पूज्यश्री का विचरण मुंबई में था। मुंबई के समस्त उपनगरों में पूज्यश्री के प्रखर प्रवचन हुए थे जिनसे जैन समाज न केवल उपकृत हुआ था, अपितु उनके हृदय में पूज्यश्री के प्रति श्रद्धा का बीज भी अंकुरित हुआ था। उनके क्रान्तिकारी प्रवचनों से युवकों में जबरदस्त जागृति का माहौल बना था। प्रायः उन प्रवचनों का आयोजन युवक मंडलों द्वारा हुआ था।

उन दिनों बाल दीक्षा का विरोध सरकारी स्तर पर उग्र हो रहा था। विधानसभा में बाल दीक्षा निषेध विधेयक प्रस्तुत होने वाला था। आधुनिक शिक्षाविद् बाल दीक्षा के विरोध में लामबंद हो रहे थे।

ऐसी स्थिति में इस विधेयक का विरोध करने के लिये मुंबई में बिराजित समस्त आचार्य भगवंतों की सानिध्यता में जैन समाज की एक विराट् सभा का आयोजन किया गया था। इस सभा का आगाज किया था- आचार्य श्री विजयलक्ष्मणसूरिजी म.सा. ने! निश्रा प्रदान कर रहे थे आचार्य श्री विजयप्रतापसूरिजी म.सा. क्योंकि वे दीक्षा पर्याय में सबसे ज्येष्ठ थे। संचालन आचार्य लक्ष्मणसूरिजी म. कर रहे थे। पूज्यश्री को भी वहाँ आमंत्रित किया गया था।

गौडीजी का सभामंडप ठसाठस भरा हुआ था। पूज्यश्री का पदार्पण हो गया था। वे यथास्थान बिराज गये थे। आचार्य लक्ष्मणसूरि आदि आचार्य भी आ गये थे। आचार्य प्रतापसूरिजी म. आने वाले थे। सभा की कार्यवाही प्रारंभ हो गई थी। तभी आचार्य प्रतापसूरिजी म. पधारे। पूज्यश्री को यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि आचार्य लक्ष्मणसूरिजी म. ने उनको बैठने के लिये भी नहीं कहा। उनका अनदेखापन पूज्यश्री को कचोट गया। उनका स्थान सबसे ऊँचे पाट पर मध्य में था। क्योंकि वे सबसे बडे और निश्रा प्रदाता थे।

आचार्य प्रतापसूरि यह देखकर एक नीचे पाट पर बैठने लगे। पूज्यश्री ने तुरंत उच्च स्वर में रोकते हुए कहा- आपका स्थान यहाँ नहीं, उधर बीच में है। आप वहाँ बिराजो।

पूज्यश्री की आवाज से हलचल हो गई। सबका ध्यान इधर हुआ। यह देखकर आचार्य लक्ष्मणसूरिजी म. ने अनमने से होकर कहा- पधारो! पधारो! अहिं बेसो!

सभा पुनः गतिमान् हुई। समय अधिक हो रहा था। पूज्यश्री का वक्तव्य था, पर आचार्यश्री की भंगिमा कह रही थी कि वे पूज्यश्री को समय नहीं दे पायेंगे।

युवा समाज पूज्यश्री को सुनने के लिये बेताब हो रहा था। पूज्यश्री को समय देने के लिये आग्रह होने लगा। पर्चियाँ आचार्यश्री के पास पहुँचने लगी। सभा में से आवाज भी आनी प्रारंभ हो गई।

आखिर सभा की स्थिति देख कर आचार्यश्री लक्ष्मणसूरिजी म. ने कहा- समय बहु थई गयो छे! त्रण मिनट मां ज तमारे वात पूरी करवी पडशे!

पूज्यश्री ने तुरंत खडे होकर अपना वक्तव्य प्रारंभ

किया। पूज्यश्री ने कहा- आपने तीन मिनट का समय दिया है। मैं ढाई मिनट में अपनी बात पूरी करूँगा। मैं आपके सामने इतिहास की एक घटना सुनाना चाहता हूँ।

परमात्मा महावीर के प्रथम गणधर गुरू गौतमस्वामी और भगवान पार्श्वनाथ परम्परा के केशी श्रमण श्रावस्ती में बिराज रहे थे। दोनों के हृदय में परस्पर मिलने व वार्तालाप का भाव जगा। दोनों की स्थितियाँ सर्वथा अलग अलग! एक पार्श्वनाथ के शिष्य तो दूसरे महावीर स्वामी के! एक पांच महाव्रतधारी तो दूसरे चार महाव्रतधारी! एक सफेद वस्त्र धारण करने वाले तो दूसरे रंगीन वस्त्र धारण करने वाले! उम्र में केशीश्रमण बडे पर ज्ञान में गौतमस्वामी बडे! फिर भी वे स्वयं चल कर केशी श्रमण के पास पहुँचे। केशी श्रमण ने आसन से खडे होकर सामने जाकर उनका स्वागत किया... आसन अर्पण किया...!

और आज एक गच्छ के होने पर भी... दीक्षा पर्याय में बडे होने पर भी... निश्रा दाता होने पर भी... जब हम एक दूसरे का सम्मान नहीं कर सकते! उन्हें उचित आसन नहीं दे सकते! ऐसे साधु और आचार्य

मिलकर जो काम कर रहे हैं, उस कार्य में सफलता मिलने का सवाल ही पैदा नहीं होता। पहले एक दूसरे का सम्मान करना सीखें, तभी कोई कार्य सफल हो सकता है।

पूज्यश्री के इस वक्तव्य का ऐसा असर हुआ कि सभी लोग कहने लगे कि पूज्यश्री ने बिल्कुल सही कहा है।

इस घटना के तीन चार साल बाद पूज्यश्री राणकपुर पधारे थे। वहाँ साधु मिले थे। उन्होंने जब पूज्यश्री का नाम जाना तो तुरंत कहा- आप तो वही हैं न जिन्होंने मुंबई में आचार्यों को सही बात कही थी।

श्रमण चिंतन

27

# जीवन चंचल है...

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

मुनिवर! संसार में कदम-कदम पर ललचाने और भटकाने वाले निमित मौजूद हैं। संयम से पतित और चलित करने वाले निमित्तों से प्रतिपल सावधान रहना साधु के लिये अनिवार्य शर्त है।

सुखशीलता, प्रमाद, विकथा, निद्रा, मायाचार, जैसे कितने-कितने दुर्गुण समय की विकटता, संघयण की निर्बलता और हुण्डा अवर्सार्पणी की पापमयता की दुहाई देते हुए साधना में मस्त साधु को संयम से परिभ्रष्ट करने का व्यूह रचते हैं।

पर साधु! तूं यदि गहराई से विचार करेगा तो पायेगा कि जीवन एक बहुमूल्यवान् उपहार है। उसमें भी मनुष्य जीवन, मनुष्य जीवन में भी अनुत्तर संयम की साधना करन का सौभाग्य उन पुण्यशालियों की ही तकदीर में लिखा होता है जिन्होंने पूर्वभवों में उत्तम संयम की दिन-रैन झंखना की हो, चारित्र को रोम रोम से ध्याया हो, अहिंसा आदि धर्मों में पुरूषार्थ किया हो।

जब अत्यन्त दुर्लभ संयम जीवन प्राप्त हो गया है, तब इसे छोडने का विचार तो तुझे मूर्ख शिरोमणि, पागलों के सरदार और बुद्धिभ्रष्ट लोगों की प्रथम पंक्ति में खडा करता है।

अगर तूं पूछेगा कि 'क्यों?तो उसका प्रत्युत्तर होगा कि संसार के भोगों की याचना में तू संयम छोड रहा हैं, पर तुझे पता नहीं कि अनित्य जीवन कुशाग्र स्थित जलबिंदु के समान चंचल है। इसे ही पढ ले सोलहवें सूत्र में-**अणिच्चे खलु भो! मणुआण जीविए कुसग्गजलबिंदुचंचले।**

यह जीवन...

- फूल पर पडी शबनम के समान अनित्य है।
- जल में उठे बुलबुले के समान नश्वर है।
- संध्या के बिखरते रंगों के समान मरणधर्मा है।
- सागर की तरंगों के समान अशाश्वत है।
- आकाश के इन्द्रधनुष के समान विनाशी है।
- वृक्ष के पके पत्तों के समान नष्ट होने वाला है।
- पवन-वेग से बिखरते बादलों के समान अस्थिर है।

जरा विचार कर! कण्डरिक मुनि वर्षों की साधना से विचलित होकर संसार में आया और विरक्त भाव से राजसंपदा का उपभोग करने वाले पुण्डरीक राजा संयम के वन में चले।

मात्र तीन दिन के भोगों के दलदल में फँसकर कण्डरिक मुनि नरकगामी हुए तथा मात्र तीन दिन तक संयम पालकर पुण्डरीक मुनि देवलोकगामी हुए।

क्या तुझे पता हैं कि तूं संसारी बनकर वर्षों तक भोग भोग पायेगा?हो सकता है कि शादी के दिन ही हृदयघात हो जाये।

हो सकता है कि दुकान प्रारम्भ के दिन ही दुर्घटना में भगवान को प्यारे हो जाओ। ऐसे तो वर्षों की संयम-साधना धूमिल हो जायेगी। तेरे सारे किये-कराये पर पानी फिर जायेगा।

संसार एक ऐसा पापमय स्थान है जहाँ पुण्य के सारे हीरे पाप के कोयले में बदल जाते है, जब कि संयम एक ऐसा पुण्यकारी अतिशय क्षेत्र हैं जहाँ सारे दु:ख के सारे काटें समाधि के फूल में बदल जाते हैं।

तुं जीवन की अनित्यता जानकर भी संयमी से संसारी बनने का कुस्वप्न संजो रहा है जबकि हजारों-लाखों आत्माओं मे जीवन की क्षणभंगुरता का बोध प्राप्त कर साम्राज्य छोडा है और संयम का वेश पहना है।

- नृत्य करती नीलांजना की मृत्यु से आदिनाथ दीक्षित हुए।
- चाचा लक्ष्मण वासुदेव को मृत्यु-शय्या पर देखकर लव-कुश वैरागी बने।
- थूंक मे जीवाणु देखकर सनत्कुमार चक्रवर्ती साधु बने।
- ढलते सूरज को देखकर हनुमान आत्मपथ के राही बने।
- श्वेत केश देखकर दशरथ ने राजवैभव छोडकर आर्हती प्रव्रज्या अंगीकार की।
- भ्राता श्रीकृष्ण की मृत्यु से बलदेव बलभद्र संयम के रंगों से सजे।
- हृष्ट-पुष्ट बैल की वृद्धावस्था देखकर करकण्डु कर्म-मुक्ति हेतु प्रयत्नशील बने।
- इन्द्र-स्तंभ की विलुप्त आभा के ज्ञातकर द्विमुख (दुम्मुह) संन्यासी बने।

ऐसे कितने ही उदाहरण है जो तारण-तरण संयम उपकरणों की महत्ता बताते हैं।

इस श्लोक के आलोक में तूं चिन्तन कर...

**नाधन्या पारमेतस्या गच्छन्ति पुरूषाधमाः।**
**ये तु पारं व्रजन्त्यस्यास्त एव पुरूषोत्तम॥**

' वे अधन्य और अधर्म पुरूष हैं जो दीक्षा लेकर उत्तम ढंग से श्रमण धर्म का पालन नहीं करते और संसार को पार नहीं कर पाते परन्तु वे पुरूष उत्तम कोटि के हैं जो निरतिचार और निर्मल संयम-साधना करके कर्म-सागर का पार पा जाते हैं।

## कान्तिमणि स्वाध्याय मण्डल का प्रारंभ

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से ईचलकरंजी नगर में कान्ति मणि स्वाध्याय मण्डल की स्थापना हुई।

पूज्य मुनिश्री ने चातुर्मासिक शिविर की दक्षिणा रूप में हर सप्ताह एक घण्टा मांगा। लगभग 25-30 धर्मप्रेमी प्रति रविवार मणिधारी भवन में स्वाध्याय करते है, स्वाध्याय में 35 बोल का विषय गतिमान है।

**मेरी प्यारी गुरु वर्या**
- नीतिका सुराणा

**गुरु मुरत मन को लुभाये, गुरु सुरत ना वीसराये**
**गुरु चरणों में आये, हम शीश नमाये**
**गुरु याद पल - पल आये !**
**गुरु का मुखडा, पुनम चंदा, शाल तेरी लहराये**
**देख गुरु की मोहनी मुरत, जग सारा हरसाये**
**गुरु याद पल - पल आये ! !**
**सागर गहरा नाव पुरानी, आगे है अंधियारा**
**ओ गुरुवर्या तेरा सहारा, दे देना कीनारा**
**गुरु याद पल - पल आये ! ! !**
**आपकी प्रेरणा आपकी बातें, जीवन भर ना भूले**
**ज्ञानी गुरुवर्या, श्रद्धांजना श्रीजी, नितीका की अरज सुनना**
**गुरु याद पल - पल आये !**

114

# विहार डायरी

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

पूज्य गणाधीश श्री हरिसागरजी म.सा. और आणंदजी कल्याणजी पेढी के बीच पत्र व्यवहार व वार्तालाप का दौर जारी था। खरतरवसही नाम का बोर्ड लगाने का निर्णय करने में इतनी देर हो रही थी। पत्र व्यवहार थोडा उग्र हो रहा था। सकल संघ का सहयोग खरतरगच्छ को प्राप्त हो रहा था। स्थान स्थान से पत्र पेढी पर पहुँच रहे थे कि पाटिया लगना ही चाहिये। पेढी समझ रही थी कि वातावरण देखते हुए पाटिया लगाना होगा, फिर भी वह इस आशा में थी कि संभव है, थोडा समय निकाल दो, फिर सभी बातें विस्मृत हो जायेगी। खरतरगच्छ के साधु हैं ही कितने! संघ है तो छोटा ही! फिर सब भूल भाल जायेंगे।

पर पूज्य गणाधीशजी म. कटिबद्ध थे कि पाटिया जब तक नहीं लग जाता, तब तक वे पालीताना से हिलेंगे भी नहीं।

इस विषय में ता. 12.12.1929 के श्वेताम्बर जैन के सम्पादक श्री जवाहरलालजी लोढा ने विस्तृत संपादकीय लिखा, जिसका शीर्षक था- पेढी वालों के मन में क्या है?

इस संपादकीय में पेढी को चेतावनी दी गई थी कि यदि आपने 31 दिसम्बर 29 तक पाटिया नहीं लगाया, तो आगे की कार्रवाही के लिये हम स्वतंत्र होंगे। 2 जनवरी 1930 के श्वेताम्बर जैन के अंक में श्री लोढाजी ने पुनः खरतरगच्छीय ध्यान दें इस शीर्षक के अन्तर्गत संपादकीय लिखते समस्त खरतरगच्छ संघ को आंदोलन के लिये तैयार रहने की अपील की। ता. 16 जनवरी 1930 के अंक में श्री लोढाजी ने पेढी वालों की पोलिसी शीर्षक के अन्तर्गत लेख लिखा। इतना सब कुछ होने पर भी पेढी की ओर से किसी भी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं हुई।

उधर पूज्य गणाधीशजी श्री हरिसागरजी म. का पेढी के साथ लगातार पत्र व्यवहार चल रहा था। उन्होंने मिगसर सुदि 15 को पत्र लिखा-

पालीताना

मिगसर सुदि 15 सं. 1986

सुश्रावक सेठ आणंदजी कल्याणजी के ट्रस्टीगण!

धर्मलाभ पूर्वक मालुम हो कि आपका तारीख 14. 12.1929 का पत्र यहाँ के आपके मुनीमजी हरिलालभाई ऊपर आया। वह पत्र हरिलालभाई ने मुझे वंचाया है और उसमें लिखी हुई रिकार्ड में रखने की हकीकत ध्यान में लेकर हम सेठ पानाचंद भाई तथा मोतीचंद भाई के साथ खरतरगच्छ संघ के आगेवानों के नाम और ठिकाना लिख भेजते हैं, वे आपको रूबरू देंगे। वास्ते आप उनकी सम्मति मंगा लीजियेगा और मैं भी मेरा कार्तिक सुदि 7 के पत्र की हकीकत की सम्मति आपकी तरफ तार से या कागद से भेजने के लिये आगेवान गृहस्थों को लिख देने की सूचना कर दूंगा। शुभम्

हरिसागर गणाधीश

नोट- आप जो पत्र अपनी तरफ से भेजे, उसकी नकल मुझे भेज देवें।

इस पत्र का 15 दिनों तक कोई जवाब नहीं आया। तब पूज्य श्री ने पौष सुदि 1 को एक पत्र चेतावनी के रूप में भेजा-

पालीताना

पौष सुदि 1 मंगलवार वि. सं. 1986

सुश्रावक आणंदजी कल्याणजी पेढी के ट्रस्टीगण!

धर्मलाभ पूर्वक मालूम हो कि मैंने मार्गशीर्ष सुदि 15 के दिन सेठ पानाचंद भगुभाई के साथ आपके मांगने के

मुआफिक तार वाले सद्गृहस्थों के एड्रेस भेज दिये थे, उसका हाल तक आपने कुछ भी अमल नहीं किया, इसका सख्त अफसोस है। आपके पास एड्रेस भेज देने के बाद मैंने सब जगह पत्र दे दिये थे कि आणंदजी कल्याणजी की पेढी तरफ से पत्र आवे तब जल्दी जवाब देना, उन्हों के पीछे जवाब भी आ गये हैं कि हमारे पास पेढी की तरफ से कोई पत्र नहीं आया।

वास्ते आपकी यह चालबाजी अब हद्द करती है। सोच लीजियेगा कि ज्यादा शान्ति नाशकारक होती है। जैन समाज की पेढी पर आप जैसे चापलूस सदृश हैं, इसी से समाज अधोगति में पहुँच रहा है।

अब आपको यह आखरी चेतावनी देता हूँ कि आठ दिन में अगर खरतरवसही की टूंक पाटिया नहीं लगा दोगे तो मैं आपके विरूद्ध, खरतरगच्छ संघ ही नहीं, अपितु पूरे जैन संघ की ओर से जोरदार आंदोलन किया जायेगा।

यह पत्र लालभाई फूलचंद के साथ भिजवा रहा हूँ।

शुभम्

हरिसागर गणाधीश

इस पत्र की शीघ्र प्रतिक्रिया हुई। और पौष सुदि 2 को ही पेढी की ओर से खरतरगच्छ के आगेवानों को पत्र लिखा गया कि पूज्य गणाधीश श्री हरिसागरजी म.सा. ने जो खरतरवसही का पाटिया लगाने का कहा है, उससे आप सभी सम्मत हो तो अपनी सम्मति हमें शीघ्र भेजें।

यदि खरतरवसही का पाटिया लगाने में पेढी टालमटोल करती है, तो सत्याग्रह करने के लिये पूरे भारत में जैसे लहर चल पडी थी। मालव प्रदेश के आगर के श्री जैन श्वेताम्बर महावीर मण्डल के प्रधान मंत्री ताराचंद जैन 'शान्तिकुटी' ने प्रस्ताव पास करके लिखा कि हमारा पूरा मण्डल सत्याग्रह के लिये तैयार है। गच्छ की आन बान शान के लिये हमारा पूरा जीवन

हाजिर है।

तपागच्छीय मुनि श्री लब्धिसागरजी म. ने इस विषय में पेढी को पत्र लिखा था जो श्वेताम्बर जैन के 6 फरवरी 1930 के अंक में प्रकाशित हुआ था–

सेठ आनंदजी कल्याणजी के ट्रस्टीगण लोग!

धर्मलाभ पूर्वक मालुम हो कि आज कई महिनों से महाराज हरिसागरजी खरतरवसही पर खरतरवसही का पाटिया लगाने के लिये आन्दोलन कर रहे हैं, पर आप लोग सुनवाई नहीं करते हैं। यह आप लोगों की लापरवाही की बात है। सो पूरी भूल है। अब लिखना है कि फौरन खरतरवसी पर पाटिया लगा दिया जावे। खाली झगडा न बढाना चाहिये। आगे पाटिया लगा हुआ था, मैंने खुद देखा है। मैं यात्रा करने गया था, जब देखा है। पाटिया न लगाना, ये सब तुम्हारी गलत बात है। तुम्हें चाहिये कि जल्दी पाटिया लगा दो।

लब्धि सागर

इतना सब होने पर भी पेढी की ओर से ढीला व्यवहार ही रहा। तब पूज्य गणाधीश श्री हरिसागरजी म. ने

पेढी को पुनः पत्र लिखा–

ओम् नमः

पालीताना

माघ वदि 12, रवि सं. 1986

सुश्रावक सेठ कस्तूर भाइ लालभाई!

धर्मलाभ पूर्वक मालुम हो कि मैं आपकी पेढी से लगभग सवा वर्ष से पत्र व्यवहार कर रहा हूँ। आपके प्रतिनिधियों ने मेरे कार्तिक सुदि सातम के पत्र को भी मान्य कर लिया। तथापि आज तक पाटिया खरतरवसही चौमुखजी की टूंक का नहीं लगाया है। हमारे नेताओं के पत्र व तार मांगे, वे भेजे गये। पेढी की तरफ से भी पूछा गया, उन्होंने पेढी को भी जवाब भेज दिया। जवाब भेजे लगभग पन्द्रह दिन हो गये हैं। तिस पर भी हाल तक कुछ भी जवाब नहीं देते हैं। मैंने कई पत्र व तार दिये, उसका जवाब दबा रहे हैं। इस कारण से आज तंग आकर आप उस पेढी के प्रमुख हैं, वास्ते आपको यह पत्र भेजता हूँ। अगर आज आपके पिताजी लालभाई होते तो हमारे समाज को इतना दुःख नहीं उठाना पडता। परन्तु क्या करें, आज हमारी सच्ची बात को कोई सुनने वाला नहीं है। अनेक तरह की चालाकियें हमारे साथ खेली जाती है। हमारे पत्र को मान करके भी अपनी मनमानी बात को आगे लाते हैं। कार्तिक सुदि 7 के पत्र में 'खरतरवसही चौमुखजी की टूंक है' वहाँ पर आपके प्रतिनिधि हाल तक हमारे नेताओं को संशय में डालने के लिये 'खरतरवसही उर्फ चौमुखजी की टूंक' लिख रहे हैं।

हमारे पत्र में उर्फ शब्द का प्रयोग नहीं है। वास्ते आप अगर झगडा मिटाना ही चाहते हो तो मेरे पत्र वाले नाम का बोर्ड जल्दी लगा दीजियेगा। आप नवयुवक हैं, विद्वान् है, श्रीमान् है, आप अपनी समाज के भविष्य का विचार कर व्यर्थ शब्द जाल में नहीं पडे, हमें संतोष हो वैसा सत्य इतिहास सिद्ध नाम को लगा कर हमारी आत्मा को संतोषियेगा। इस पत्र का संतोषकारक जवाब आपकी तरफ से नहीं आवेगा तो फिर हम अपने हक का दावा आपकी पेढी पर कर देंगे।

दोनों तरफ का हजारों का खर्च होगा, उसके जवाबदार आप समझे जायेंगे। हमने तो सवा डेढ वर्ष तक सब शान्ति रखी। मगर आपको झगडे में ही मजा आता है। जैन समाज के पैसे को विधर्मियों के हाथ गमाने में ही आप श्रेष्ठता समझते हो! किनारे आई हुई जहाज को क्यों डूबा रहे हो। आज का जमाना मिलने का है, वहाँ पर आप जुदा करने में क्यों अग्रगण्य होने का भाग लेते हो। यह पत्र आपको सत्य हाल समझाने के लिये ही लिखा है।

शुभम्

हरिसागर गणाधीश **( क्रमशः )**

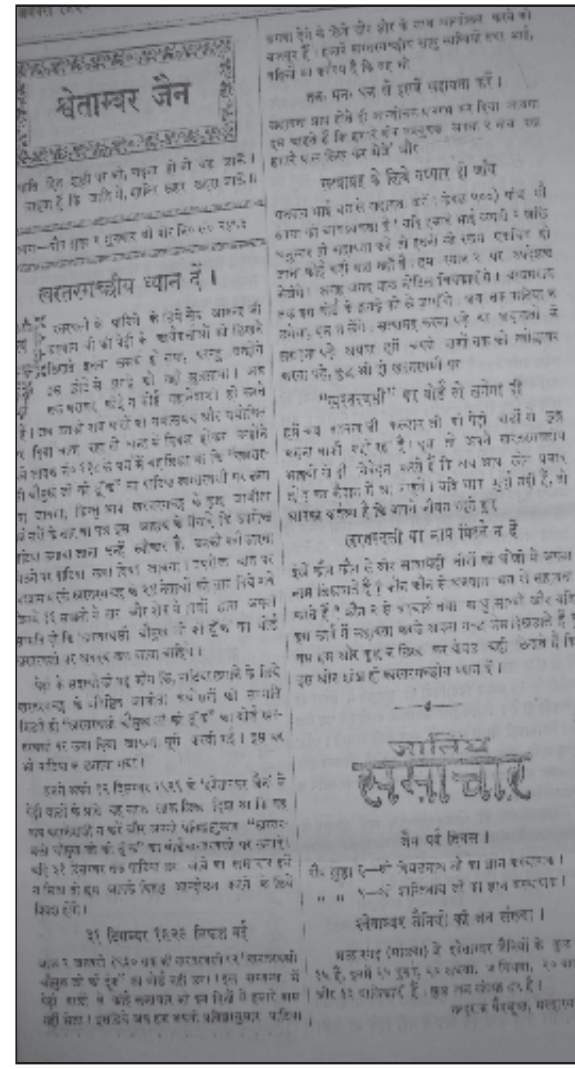

एक सुलगती समस्या

# कैंसे रुके दुर्घटनाऐं

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

चातुर्मास की पूर्णाहुति के साथ ही साधु साध्वियों का पद विहार प्रारंभ हो जाता है। अनंत काल से जैन साधु साध्वी अपनी उपयोगी स्वल्प उपधि कंधों पर लिये पद विहार करते आये हैं।

वर्तमान काल के वैज्ञानिक वातावरण ने वाहनों की अपार सुविधा लोगों को दी है। अत्यन्त तीव्र गति से दौडते वाहनों की चपेट में पिछले 5-7 वर्षों से साधु साध्वी बडी संख्या में आ रहे हैं। चातुर्मास के बाद ज्योंहि विहार प्रारंभ होता है और एक दो दिन के अन्तराल में कहीं न कहीं कोई सडक दुर्घटना के दु:खद समाचार सुनने को मिल जाते हैं। पिछले दिनों पूज्य आचार्य श्री रत्नाकरसूरिजी म. का स्वर्गवास वाहन से टकराने के कारण हुआ। पूर्व में पू. आगमज्ञ श्री जंबूविजयजी म. आदि विशिष्ट मुनि भगवंतों को इसी प्रकार हम खो चुके हैं। लगातार हो रही इन दुर्घटनाओं ने साधु साध्वियों को चिंता में डाल दिया है। देखा जाता है कि जब कोई दुर्घटना होती है, तो साधु साध्वियों में... श्रावकों में... संघों में ऊहापोह चलता है। तरह तरह के सुझाव आते हैं। आठ दस दिन बाद सब कुछ सामान्य हो जाता है।

इन दुर्घटनाओं पर विराम लगाने के विषय पर हमें गंभीर चिंतन करना चाहिये। पूर्व में ऐसी सडकें नहीं थी तो वाहन भी न थे। वाहनों के नाम पर बैलगाडियां व ऊँटगाडियां चला करती थी। उन वाहनों से दुर्घटना की कोई ऐसी संभावना नहीं होती थी। चलने के लिये पगडंडियाँ थी। पर जब से कोलतार (डामर) की सडकों का निर्माण हुआ है। और फोर लाइन... सिक्स लाइन का कन्सेप्ट आया है, तब से पगडंडियाँ समाप्त हो गई है। साधु विहार करें तो कहाँ करे! आखिर उन्हें सडक पर ही चलना होगा। दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

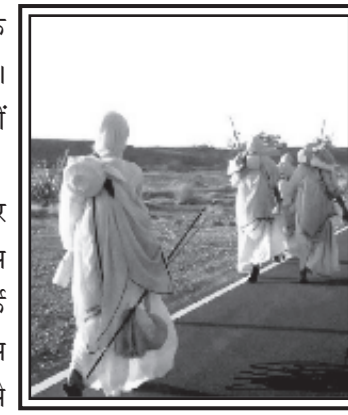

वाहन विहार करना चाहिये, इस विषय में काफी तर्क दिये जाते हैं। पर इस तर्क का दुर्घटनाओं से कोई संबंध नहीं हो सकता। क्योंकि पदयात्रियों के साथ जितनी दुर्घटनाऐं होती हैं, उससे कई गुणा वाहनों के साथ दुर्घटनाऐं होती है।

जब साधुओं को सडक पर ही विहार करना है तो ऐसा क्या किया जा सकता है कि दुर्घटनाऐं रूके! इसके लिये सबसे उपयोगी सुझाव एक ही होगा- हर सडक के पास पैदल चलने के लिये फुटपाथ की व्यवस्था की जाये। केवल जैन साधु ही नहीं, अन्य धर्मों में भी पैदल यात्रा का बहुत महत्व है। रामदेवरा, डाकोर, पंढरपुर आदि तीर्थों की यात्रा करने के लिये लाखों श्रद्धालु लोग पद यात्रा करते हैं। उन सबके लिये फुटपाथ का निर्माण सुविधाजनक होगा।

जैन साधुओं का सर्वाधिक विहार राजस्थान, गुजरात व महाराष्ट्र में होता है। इन तीन प्रान्तों की सरकारों पर फुटपाथ बनाने के लिये दवाब बनाया जाये, निवेदन किया जाये! फुटपाथ समस्या का सरल व सटीक समाधान है। वाहनों के लिये मार्ग अलग हो जायेगा, साधुओं के लिये अलग!

आगेवान श्रावकों व संघों को इस सुझाव पर गंभीर विचार करके इस संदर्भ में प्रयास करना चाहिये ताकि हमारी अनमोल श्रमण-संपदा इस प्रकार दुर्घटना की भेंट न चढे।

मधुर संस्मरण

# मेरी अनुभुति

बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

मैं अत्यंत सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे बहुत बचपन में ही संयमी होने का अवसर मिला। यद्यपि मैं यह दावा तो नहीं करती कि संयम को मैंने आत्मसात् कर लिया है फिर भी मेरे लिये यह बहुत बड़ी उपलब्धि हैं कि मुझे परमात्मा का शासन मिला। शासन की सम्पत्ति एवं समृद्धि उपलब्ध हुई।

शासन की समृद्धि और सम्पत्ति से तात्पर्य है- प्रभु का पूरा संघ मुझे प्राप्त हुआ। यह भी मेरा महान पुण्योदय है कि मुझे अपनी योग्यता से अधिक संघ का प्रेम मिला। परमात्मा की आज्ञा को समर्पित संघ की संवेदना पाकर मेरा हृदय.... मेरी संवेदनाएं जैसे तृप्त हो गयी।

मैंने अनुभव किया है- मैं आज जिस सकारात्मक मानसिकता के साथ अपनी संयमी यात्रा को गतिमान कर रही हूँ, उस मानसिकता के निर्माण में मेरी परिस्थितियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। मेरे जीवन में बहुत उतार चढाव आये। यद्यपि जिस समय परिस्थितियों की प्रतिकूलता हुई थी, उस समय तो मन को संयत रखना मेरे लिये भी कठिन अवश्य रहा होगा पर यह मेरा आनुभविक निष्कर्ष है कि उस स्थिति ने मेरे मन को खूब सकारात्मक प्रेरणा दी।

मैंने कहीं पढ़ा था- पत्थर पर लगने वाला हर हथौड़ा उस समय उसके लिये कष्टदायक अवश्य होता है पर उसी से उसमें संसार का पूजनीय बनने की योग्यता प्रकट होती है। अगर हम प्रतिकूलता को सकारात्मक नजरिये से देखना शुरू कर दें तो वह प्रतिकूलता भी हमारी लिये वरदान बन जाती है।

आग की आँच पाकर ही मटका किसी भी वस्तु को धारण करने की क्षमता प्राप्त करता है।

यद्यपि पू. उपाध्याय श्री भाई म. एवं मैं एक ही माता-पिता की संतान... एक ही प्रकार का जीवन एवं एक ही प्रकार के संस्कार होने के बावजूद वे प्रारंभ से ही शांत एवं बहुत सीमा तक रिजर्व स्वभाव के है। एक शब्द में उनके स्वभाव को 'अंतर्मुखी' कहा जा सकता है। वे जो मिला। उसे सहज स्वीकार कर लेते परन्तु मेरा स्वभाव उनके ठीक विपरीत था। मैं स्थिति को स्वीकार करने की अपेक्षा उसे बदलने का पुरूषार्थ करती थी।

मेरा जिन्हें मैं उचित समझती थी, उन मुद्दों पर आग्रह भी रहता था।

परन्तु धीरे धीरे पू. भाई म. के स्वभाव ने मेरे मन को बदला।

ऐसा भी नहीं कि मुझे भाई म. ने कभी टोका अथवा बदलने का संकेत भी दिया पर स्थितियाँ ज्यों ज्यों घटित होती गयी, मेरा मन स्वत: ही बदलता गया।

आज मैं जिस मानसिक धरातल पर खड़ी हूँ, मुझे लगता है पूर्ण संतुष्ट तो नहीं कह सकती पर फिर भी प्रसन्न हूँ। संतोष तो मोक्ष-प्राप्ति तक हो नहीं सकता... होना भी नहीं चाहिये।

संयम का आनंद तभी आ सकता है जब साधक स्वीकार करने की मानसिकता बना ले। उसे चातुर्मास के अतिरिक्त विहार में प्रतिदिन नये क्षेत्रों में विचरण करना होता है। नये लोगों के साथ तालमेल बिठाना अगर उसे नहीं आता हो तो स्थिति समाधिदायक नहीं हो सकती।

प्रत्येक पर्युषण में हम परमात्मा महावीर का जीवन चरित्र सुनते हैं... पढते हैं। विडम्बना यही है कि प्रभु के जीवन को हमने मात्र पठन-पाठन, उपासना या प्रशंसा का

विषय ही बनाया है। हकीकत यह है कि प्रभु महावीर हमारे आचरण का विषय है। अगर भगवान महावीर की सहिष्णुता संपूर्णत: हमारे आचरण में उतरे तो इसी भव में कर्मचक्र से हम मुक्त हो सकते हैं पर अगर इतनी गहराई में उतरने का पुरूषार्थ न भी हो तो कम से कम शब्द-सहिष्णुता तो हमें अपने जीवन में उतारने की साधना अवश्य करनी चाहिये।

शब्द-सहिष्णुता से तात्पर्य है- अपने विरूद्ध सुनकर भी क्रुद्ध न होना। बहुत बार साधक आत्माओं द्वारा भी यह सुना जाता है कि मैं क्या कमजोर हूँ जो उसका सुन लूं। मुझे ही क्यों दबाया जाता हैं।

सुनकर मन विविध कल्पनाओं में..... विचारों में डूब जाता है। भगवान महावीर का जब साधनाकाल चल रहा था उस समय एक ग्वाला उन्हें परिषह देने के लिये उतावला हो उठा। परमात्मा महावीर जिन्होंने अपने जन्म समय में मात्र एक अगुंठे का स्पर्श किया और संपूर्ण ब्रह्माण्ड विचलित हो गया था क्या वे यौवन में इतने कमजोर थे कि प्रतीकार करने की अपेक्षा समर्पित होना ही उचित समझा।

परमात्मा महावीर को अधिक परिश्रम की आवश्यकता भी नहीं थी। वे तो हल्का सा उसे छू लेते तो शायद ग्वाला पलभर में ही गायब हो जाता। परन्तु प्रभु महावीर तो उस ग्वाले की कानों में कीले ठोकने की मानसिकता देखकर स्तंभ की तरह स्थिर हो गये ताकि उसे अपनी क्रिया में सहजता रहे।

मन सहज ही अपनी मनोवृत्ति से परमात्मा महावीर की मनोवृत्ति से तुलना करना प्रारम्भ कर देता है। प्रभु महावीर प्रतीकार करने में सक्षम थे फिर भी स्वीकार किया और हम उनकी अपेक्षा अत्यन्त असक्षम होते हुए भी प्रतीकार करने में ही स्वयं को शक्तिमान समझते हैं। क्यों ?

इससे यह सिद्ध होता हैं कि सक्षम व्यक्ति ही स्वीकार करता है जबकि कमजोर व्यक्ति प्रतीकार करने में ही अपनी महानता मानता है। हम छोटा सा निमित्त पाकर अपनी शान्ति खो देते हैं। किसी का हल्का सा प्रतिकूल व्यवहार देखकर अपनी साधुता.....परमात्मा महावीर का संदेश विस्मृत कर बैठते हैं जबकि साधना का मूल सूत्र हैं **''क्षमा वीरस्य भूषणम्''** प्रतिकूलता में भी अनुकूलता खोजना ही वीरत्व की पहचान है।

मैं प्रभु महावीर की अनुयायी हूँ! उनका वेश..... उनका नाम..... उनकी पहचान मैंने पायी है पर उनकी क्षमता.... उनका धैर्य.... उनकी सहिष्णुता.... मुझे कब प्राप्त होगी?

महासती मृगावती इस शाब्दिक सहिष्णुत्व के बल पर केवली बन गयी तो चंडरूद्राचार्य जैसे क्रोधी गुरू को पाकर एक दिन के दीक्षित मुनिराज ने समता के बल पर अनादि अनंत काल की प्यास बुझा ली। यही सहिष्णुता मेरे स्वभाव का अंग कब बनेगी, यह प्रश्न मेरे जेहन में आज बार बार टकरा रहा है।

## अनमोल वचन

- युग प्रधान प्रथम दादा जिनदत्तसूरि के पास तपोबल का अपार वैभव था। उन्होंने लाखों व्यक्तियों को व्यसन मुक्त करके सत्य-धर्म का राही बनाया।
- मणिधारी दादा जिनचन्द्रसूरि ऐसी अनोखी चमक वाले खरतरगच्छाचार्य थे, जिन्होंने छोटी उम्र में सम्राटों को प्रतिबोध देकर महावीर प्रभु के पथ का अनुगामी बनाया था।
- किसी भी सम्प्रदाय के हों, भगवान महावीर को मानने वाले सभी एक है, सभी भाई है। यह उद्घोष परम उपकारी कलिकाल कल्पतरू प्रत्यक्ष प्रभावी दादा जिनकुशलसूरि गुरुदेव ने किया था।

# तखतमलजी सालेचा : एक उदारदिल श्रावक

विजयकुमार कोचर, नंदुरबार

ज्योंहि मुझे सूचना मिली कि हमारे वरिष्ठ समाज सेवी परम आदरणीय श्री तखतमलजी बासा का अल्प बीमारी के बाद स्वर्गवास हो गया है, सुनकर मन उदास हो गया। इन तीन चार वर्षों से श्री सालेचा सा. खरतरगच्छ गुरू परम्परा से पूर्ण रूप से जुड़ गये थे।

यद्यपि उन्हें केंसर की असाध्य बिमारी ने जकड़ लिया था फिर भी उनके चेहरे का सदाबहार हास्य ज्यों का त्यों बरकरार था।

उनकी बढ रही अस्वस्थता से चिंतित परिवार समुचित चिकित्सा के लिये उन्हें पुना ले गया था और इलाज के बाद वे काफी ठीक भी हो गये थे। उनकी अपनी कर्मभूमि नंदुरबार जाने की भावना को देखते हुए परिवार उन्हें नंदुरबार ले आया था। जब चातुर्मासार्थ विराजमान पूज्या गुरूवर्या श्री बहिन म. विद्युत्प्रभा श्री जी म.सा. को उनके आगमन की सूचना मिली, तो पूज्याश्री उनके आवास पर पधारे थे।

जैसे ही श्री सालेचा को पूज्यवर्या श्री के पदार्पण की सूचना मिली, वे अपनी पीड़ा भूल गये। उनका चेहरा आनंद से खिल उठा। उठने की क्षमता नहीं थी, अत: लेटे-लेटे ही उन्होंने वंदना करते हुए कहा-आपने कृपा की... मुझे दर्शन दिये। अब आप मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मैं पावापुरी परमात्मा की कल्याणक भूमि का स्पर्श कर सकूं। पावापुरी, सम्मेतशिखर आदि तीर्थों की स्पर्शना की तीव्र अभिलाषा उनके रोम-रोम से टपक रही थी।

सम्मेतशिखर, ऋजुबालिका एवं पावापुरी आदि कल्याणक भूमियों का स्पर्श वैसे वे चातुर्मास प्रारंभ होने के 10 दिन पूर्व ही करके लौटे थे। उन तीर्थों की यात्रा ने उनके हृदय को गहरा सुकून दिया था और इसी कारण वे वहाँ पुन: जाना चाहते थे।

वहीं उनके परम मित्र श्री पुखराजजी श्री श्रीमाल बैठे हुए थे। उनकी ओर संकेत करके उन्होंने कहा- मुझे पावापुरी का संघ निकालना है। आप सारी व्यवस्था देखना। पुखराजजी ने तुरंत कहा-जरूर निकालेंगे। आप बस जल्दी से जल्दी ठीक हो जाओ।

बहिन म. ने उनके स्वर में अपना स्वर मिलाते हुए कहा- बासा! आप गृहस्थ लोगों को ही ले जायेंगे या हमको भी लेकर जायेंगे। असली संघ तो वह है जहाँ चतुर्विध संघ होता है। उन्होंने हँसते हुए कहा- आप कहेंगे तो वैसा संघ भी निकाल लूंगा।

कुछ याद करते हुए उन्होंने पुन: कहा- चातुर्मास बाद जब विहार हो उस समय प्रथम मुकाम पर अल्पाहार की अच्छी से अच्छी व्यवस्था होनी चाहिये और उसका सारा लाभ मुझे देना है।

पुखराजजी ने कहा- आपकी भावना के अनुसार ही सारी व्यवस्था होगी। यद्यपि कार्यक्रम में मेरी उपस्थिति नहीं रहेगी परंतु व्यवस्था मैं जरूर देख लूंगा। बहिन म. आधा घण्टा वहाँ रूके। उस अवधि में मैंने अनुभव किया- उन्हें न परिवार की आसक्ति थी, न व्यापार की चिन्ता। उनकी

मानसिकता में कल्याणक भूमि की स्पर्शना की तीव्र झंखना थी।

उन्हें उद्‌बोधन देते हुए बहिन म. ने कहा- आप अपना मन पावापुरी एवं वहाँ के अधिपति प्रभु महावीर से जोड़ लेना। शरीर के स्तर पर जब जाना होगा, तब जाना होगा पर मानसिक रूप से आप प्रतिपल वहीं रहना।

अगर मन वहाँ रह गया तो मानना प्रतिपल आप परमात्मा के निकट हो रहे हो। प्रभु की निकटता अगर आपकी आत्मा को प्राप्त हो गयी तो जीवन की इससे अधिक और क्या सार्थकता होगी?

उनकी स्थिति धीरे-धीरे गिरने लगी। उन्हें पुन: पुना ले जाया गया और अंत में समाधिपूर्वक नवकार मंत्र सुनते-सुनते उनकी आत्मा ने नये जीवन के लिये प्रस्थान कर दिया।

श्री तखतमलजी सा. का जीवन बचपन से ही प्रभावशाली रहा। उन्होंने व्यापार भी डंके की चोट पर किया। उनके हम उम्र कहते हैं वे व्यापार में उधार कभी नहीं रखते थे। उनके वहाँ से सामान लेने के लिए पेमेंट पहले भेजना होता था। उनका माल इतना साफ सुथरा होता था कि लोग अग्रिम पेमेंट करके भी उनसे माल लेते थे।

उनकी धर्मपत्नी का केंसर की बिमारी में स्वर्गवास होने के बाद वे और अधिक आराधना से जुड़ गये थे। प्रतिदिन गॉव में अजितनाथ दादा के दर्शन करने के बाद शहर के बाहर महावीर स्वामी मंदिर एवं मुनिसुव्रत दादा व दादावाडी के दर्शन करने जरूर जाते थे।

जब चार साल पूर्व प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री भाई म. सा. का चातुर्मास नंदुरबार हुआ था, उस समय स्वधर्मी बंधुओं की भक्ति के मुख्य लाभार्थी का चढावा लिया था। तो इस वर्ष जब पूज्या बहिन म. का चातुर्मासार्थ प्रवेश हुआ था तो गुरूपूजन का चढावा भी उन्हीं का था।

उनके स्वर्गवास की सूचना पाकर पू. उपाध्याय गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. ने कहा- हमने एक समर्पित एवं परम भक्त श्रावक तो समाज ने एक उदार दानवीर व्यक्तित्व खो दिया है। ऐसे कर्मनिष्ठ व्यक्ति कभी-कभी ही समाज को उपलब्ध होते हैं।

पू. बहिन म. अपनी संवेदना प्रकट करते हुए कहा- हमने श्री सालेचाजी को कम देखा पर जितना देखा अनुमोदना के लिये पर्याप्त था। उनकी रग-रग में गुरू भक्ति थी।

उनकी आत्मा को प्रभु महावीर का शासन मिला था और अंतिम समय में प्रभु की निर्वाणभूमि ही बसी हुई थी। उनकी आत्मा को सिद्धत्व की प्राप्ति तक परमात्मा का शासन उपलब्ध होता रहे।

समाज सेवी श्री पुखराजजी श्री श्रीमाल ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहा- आज मैंने अपना दायां हाथ स्वरूप परम मित्र खो दिया है। मुझे समाज सेवा में सदैव उनका सहयोग रहता था। मेरी प्रत्येक सलाह को स्वीकार करने वाले उन्होंने अपनी अंतिमयात्रा के लिये न सलाह ली न अनुमति।

प्रभुभक्त एवं गुरूभक्त उनकी चेतना की समाधि प्राप्त हो

## जटाशंकर अंग्रेजी अनुवाद विमोचन

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. द्वारा लिखित जटाशंकर के अंग्रेजी अनुवाद की पुस्तक का विमोचन बैंगलोर विजयनगर में किया गया। यह विमोचन संघवी विजयराजजी डोसी परिवार द्वारा किया गया। इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद परम गुरुभक्त दिल्ली निवासी श्री नीरजजी जैन की प्रेरणा से प्रो. नवीनकुमार, दिल्ली ने किया है। इसका संपादन प्रो. श्वेता प्रेरक ललवानी इचलकरंजी वालों ने किया गया है।

# एक अपूरणीय क्षति

बहिन म. डॉ. साध्वी श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.

मैं चातुर्मास समापन के बाद जिनमंदिर एवं दादावाडी शिला-न्यास कार्यक्रम हेतु नंदुरबार से विहार कर अक्कलकुआं गयी हुई थी। अचानक मुझे बाड़मेर से सूचना मिली कि राष्ट्रभक्त देशप्रेमी पद्मश्री विभूषित मगराजजी जैन का स्वर्गवास हो गया है।

श्री मगराजजी को मैं विगत तीन दशक से भी अधिक समय से जानती हूँ। वे संपूर्ण श्रावकत्व की भूमिका का जीवन जीते थे।

प्रारंभ से ही वे महात्मा गांधीजी की विचारधारा को समर्पित थे और इसी कारण शुद्ध खादी का पहनावा एवं शत प्रतिशत ईमानदारी उनकी रग-रग में थी।

वे नेहरू युवक केन्द्र बाड़मेर के संयोजक थे। उस केन्द्र का प्रारंभ उन्होंने ही किया था। इस केन्द्र के पास प्रारंभ से ही ऑफिस कार्य के लिये जीप थी।

एक बार ओसवाल न्याति नोहरे में व्याख्यान पूरा होने पर उनकी धर्मपत्नी घर की ओर जा रही थी। न्याति नोहरे से बाहर निकले ही थे कि श्री मगराजजी की गाड़ी पीछे से आकर हमारे पास रूकी।

उन्होंने सविनय वंदना की और पुनः गाड़ी में बैठ गये। पास खड़ी अन्य महिला ने मगराजजी की धर्मपत्नी को कहा- यह गाड़ी आपके घर के आगे से ही निकलेगी फिर आप क्यों नहीं बैठ गये?

उनकी धर्मपत्नी ने तुरंत कहा- वे इस बात को कतई पसंद नहीं करते कि सरकार की दी हुई सुविधा का लाभ परिवार ले। आज सहज ही घर की ओर जाती गाड़ी में बैठेंगे तो कल गाड़ी में बैठने की आदत हो जायेगी। फिर गाडी मंगाकर भी उसका उपयोग होने लगेगा। इसलिए न मैं कभी गाड़ी का उपयोग करती हूँ और न बच्चे।

उनकी बात सुनकर मेरा मन उनके प्रति अभिभूत हो उठा। और तब से आज तक लगातार मेरा उनसे संपर्क बना हुआ था।

मैंने लगभग 25 वर्ष पूर्व कुछ विशिष्ट स्मारक की कल्पना करते हुए जिन कुशल सूरि सेवाश्रम संस्थान ट्रस्ट बनाया था। इस ट्रस्ट के अंतर्गत मेरी भावना थी कि शिक्षा संबंधी कार्य हो क्योंकि यह स्मारक मेरी गुरूवर्या आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोद श्री जी म.सा. की स्मृति में बनाना था। गुरूवर्या श्री ज्ञान समर्पित चेतना होने से शिक्षा से जुड़ा स्मारक ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती थी।

इस संस्थान के महामंत्री पद पर उनका ही चुनाव किया गया। ट्रस्ट का विधान, रजिस्ट्रेशन, जमीन प्राप्ति एवं उस पर शिलान्यास आदि सारा कामकाज उनके ही कार्यकाल में संपन्न हुआ था। मैं तो चाहती थी कि प्रतिष्ठा तक वे ही महामंत्री के रूप में इस संस्था को अपनी सेवाएं प्रदान करते रहे पर अपने गिरते स्वास्थ्य को देखकर उनके बार बार निवेदन पर उनके स्थान पर अन्य महामंत्री की नियुक्ति की गयी। यद्यपि वे पद मुक्त हो गये थे पर संस्था के प्रति उनका अहोभाव अंतिम समय तक बना रहा।

संस्थान का हो रहा विकास उनकी प्रसन्नता बढाने के लिए पर्याप्त था। बाहर उनका आना कम ही होता था पर इन वर्षों में मेरा बाड़मेर प्रवास बार-बार होता रहा साथ ही दो चातुर्मास भी हो गये। इस अवधि में जब भी वे मिलते सबसे

पहले वे कुशल वाटिका स्मारक की विराट् स्तर पर हो रही विकास यात्रा पर अपना आनंद अभिव्यक्त करते और उसके बाद वे अपने विभिन्न प्रकल्पों पर चर्चा करते।

राष्ट्रनिष्ठा एवं समाज सेवा के कारण धीरे-धीरे उनकी प्रसिद्धि राज्यव्यापी न रहकर देशव्यापी हो गयी। इसी कारण 1989 में भारत सरकार ने उन्हें सम्मानित करते हुए ''पद्मश्री'' जैसे राष्ट्रीय अलंकरण से विभूषित किया। बाड़मेर जिले के वे एकमात्र व्यक्ति थे जिन्हें ''पद्मश्री'' जैसा विशिष्ट सम्मान प्राप्त हुआ।

इस राष्ट्रीय सम्मान को पाकर भी वे इतराये नहीं बल्कि बधाई देने वालों को उन्होंने यही कहा-मैंने जो कुछ किया या कर रहा हूँ, अपना फर्ज समझते हुए कर रहा हूँ। मैंने ऐसा क्या किया है जिसके कारण मुझे राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिला एवं आप सभी बधाईयां दे रहे है।

यह उनका पुण्योदय था कि उन्हें धर्मपत्नी भी अपने अनुरूप ही प्राप्त हुई। उनकी धर्मपत्नी ने उनकी जीवनशैली से सामंजस्य बनाते हुए उसी सामान्य एवं सादगीयुक्त वातावरण को हृदय से स्वीकार कर लिया था। उन्होंने संपन्न माहौल में रहकर भी कभी श्री मगराजजी से महंगी जिंदगी की कामना नहीं की बल्कि अपनी एकदम सीमित आय में पूर्ण तृप्ति का अहसास करते हुए पुत्री सहित तीन पुत्रों की परवरिश की।

अपनी धर्मपत्नी के लिये वे कहते- इनकी तपस्या का ही परिणाम हैं कि मेरे तीनों पुत्रों ने सरकारी विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करके भी उच्चशिक्षित होकर एक सी.ए., एक इंजिनियर एवं एक अपने पिता के पदचिन्हों पर चलता हुआ नेहरू युवा केन्द्र से विभिन्न स्तरों पर अपनी सेवाएं दे रहा है।

उन्होंने कमजोर अंध बधिर बच्चों की शिक्षा के लिये अपनी 'श्योर' संस्था के द्वारा विद्यालय की स्थापना की थी। बच्चों का अपना विद्यालय एवं छात्रावास हो इस हेतु उन्होंने अथक प्रयास किये।

जिस समय कुशल वाटिका संस्थान की विद्यालय आदि का उद्घाटन था, उन्होंने मुझे कहा- उद्घाटन के अवसर पर हमारी संस्था के अंध बधिर बच्चों को आप एक गीत गाने का अवसर दें। स्वीकृति पर गीत गाया था। मुख्य अतिथि के रूप में सेठ श्री नरेन्द्रजी बरलोटा होस्पेट से पधारे थे। उन्होंने अपनी ओर से एक बड़ी राशि घोषित की। जैन सा. ने कार्यक्रम के तुंरत बाद कहा- आपका कार्यक्रम हमारे लिये सार्थक हो गया।

मैंने कहा- आपकी संस्था के उद्देश्य इतने पवित्र हैं कि वह संस्था आपकी नहीं बल्कि हम सबकी है। नि: संदेह जैन सा. के लिये यही कहा जा सकता है कि उनका जीवन अपनी कामनापूर्ति के लिये नहीं, कमजोर असहाय जनता के लिये ही था। उन्होंने अपना हित कभी नहीं चाहा अपितु सदैव राष्ट्र एवं राष्ट्र की जनता का ही भला चाहा।

उनकी इस सर्वजनहिताय की मंगल कामना का परिणाम भी उन्हें प्राप्त हुआ। अंतिम अवस्था में उनकी धर्मपत्नी ने तो भरपूर सेवा की ही पर उनके उच्चशिक्षित सुपुत्र श्री आनंद, श्री लक्ष्मण एवं श्री भुवनेश ने भी भरपूर अपनी सेवाएं प्रदान की। साथ ही उनके कार्यालय से जुड़ी लता बहिन ने उनकी सेवा में रात दिन एक कर दिया।

उनकी विदायी से राष्ट्र एवं समाज ने सेवाभावी मानवहित चिंतक राष्ट्रभक्त समाजसेवी व्यक्तित्व तो खोया ही हैं पर मैंने एवं संघ ने एक बहुत गहरा अपनत्वभरा श्रावक खो दिया है।

उनकी आत्मा अतिशीघ्र जिनेश्वर परमात्मा का शासन प्राप्तकर मोक्षगामी बने।

।। श्री लौद्रवपुर चिंतामणि पार्श्वनाथाय नमः ।।

।। प. पू. दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त मणिधारी जिनचन्द्र जिनकुशल जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ।।

## जैसलमेर जुहारिये, दु:ख वारिये रे अरिहन्त बिम्ब अनेक तीर्थते नमो रे – समय सुन्दरजी

प. पू. जैन कोकिला श्री विचक्षण श्रीजी म.सा. द्वारा स्थापित श्री जिनदत्तसूरि जैन मण्डल चैन्नई की प्रेरणा से

लाभार्थी : शांतिबाई–गोपीचन्दजी गुलेच्छा, मदनबाई–लालचंदजी लोढ़ा, अतंरदेवी–सोहनलालजी लुणावत

राजस्थान राज्ये मरुधर क्षेत्रे विश्व विख्यात श्री जैसलमेर महातीर्थ समीपवर्ती चिंतामणि पार्श्वनाथ श्री लौद्रवपुर तीर्थे,
दादा जिनदत्तसूरि–मणिधारी जिनचन्द्रसूरि–जिनकुशलसूरि–जिनचन्द्रसूरि व गुरुमूर्ति एवं श्री काला भैरव – गौरा भैरव विंवों की भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव निमित्ते

# रत्नत्रयी प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे
# सस्नेह भावभरा आमन्त्रण

**मंगल प्रतिष्ठा शुभ मुहूर्त**

**माघ शुक्ला 7 सोमवार, 26 जनवरी 2015**

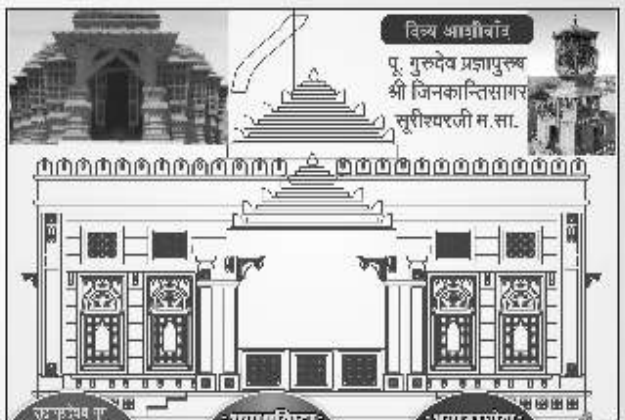

दिव्य आशीर्वाद
पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष श्री जिनकान्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा.

**आज्ञा प्रदाता**

पूज्य आचार्य श्री जिनकैलाशसागरसूरिजी म.सा.
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

**पावन निश्रा**

पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा.

**पावन निश्रा**

छत्तीसगढ़ रत्न शिरोमणि महत्तरा पद विभूषित प. पू. मनोहर श्रीजी म.सा. की सुशिष्याएँ
मंडल प्रमुख प. पू. श्री मनोरंजना श्रीजी म.सा., प. पू. श्री सुभद्रा श्रीजी म.सा., प. पू. श्री शुभंकरा श्रीजी म.सा.

प्रतिष्ठा के इस पावन अवसर पर सकल श्री संघ को पधारने की हार्दिक विनंती है
निवेदन है कि समुचित व्यवस्था हेतु अपने
आगमन की सूचना पूर्व में प्रदान करें।

**महोत्सव आज्ञा प्रदाता**

## श्री जैसलमेर–लौद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, जैसलमेर

जैसलमेर-345001 ( राजस्थान ) फोन : ( 02992 ) 252404, मो. 8003094586

ज्ञानी ध्यानी पंच महाव्रतधारी प्रखर व्याख्यात्री
साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा. की शिष्या

# शुद्धांजना श्रीजी म.सा., श्रद्धांजना श्रीजी म.सा.

## को संयम दिवस की ढेर सारी बधाई

प. पू. सा. श्री शुद्धांजना श्रीजी म.सा.

प. पू. सा. श्री हेमप्रभा श्रीजी म.सा.

प. पू. सा. श्री श्रद्धांजना श्रीजी म.सा.

संयम की चांदनी शीतल की फुहार
संयम के झरने में अमृत की बहार

परम पूजनीया साधवी श्री श्रद्धांजना श्रीजी म.सा. जिन्होंने अपने 28 साल इस पवित्र संयम जीवन में व्यतीत किये, आगे भी अपने इस संयम जीवन को इतनी ऊँचाइयों तक लें जायेगें की जहां सिर्फ उजाला ही हो, अंधेरे की कोई गुंजाईश ही ना हो।

इस पावन दिवस पर हमारी सबकी शुभकामनाएं और उनका आशीर्वाद हमारे सिर पर बना रहे।

बार बार दिन ये आये, बार बार दिल ये गाए
आप जियो हजारो साल है यही आरजु
Happy Birthday to you

बिना foundation के मकान नहीं होता
बिना गुरु के संस्कार नहीं मिलते
यदि जिसने जीवन में गुरु की शरण ना ली हो
तो वहाँ कभी भी पवित्र वातावरण के फुल नहीं खिलते।।
हर मोड में आप सदा याद आयेंगे
आपके विचार और आपकी प्रेरणा कभी न भूल पायेंगे।।
गुरु ज्ञान का उजाला है
मन के विष को मिटा दे वो अमृत का प्याला हैं।।

भावपूर्ण वंदना के साथ नीतिका सुराणा

# हुबली प्रतिष्ठा-दीक्षा एवं बल्लारी दीक्षा समारोह केमरे की नजर से...

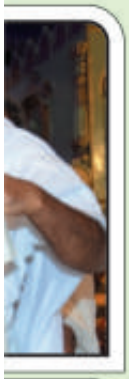

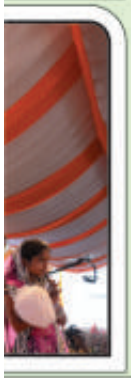

*With best compliments from :-*

श्री व्यापारीलालजी गोदावरीदेवी

अंजुदेवी-रतनलाल, कान्तादेवी-विनोदकुमार,
मंजुदेवी-गौतमकुमार, मीनादेवी-पारसमल,
कंचनदेवी-सुरेशकुमार ( पुत्र-पुत्रवधु ),
मौनादेवी-हितेशकुमार, रुपलदेवी-सुशीलकुमार
( पौत्र-पौत्रवधु ), हिम्मतकुमार, विवेक,
वंदन, विपुल, रौनक ( पौत्र ),
भव्या, तनिषा ( पौत्री ),
कमलादेवी-सरदारमलजी चौपड़ा
( बहिन )

प्रतिष्ठान

## रतनलाल गौतमकुमार
## बोहरा ब्रदर्स

403, 603, Safal Flora,
Godha caup Road, Shahibag,
Ahmedabad - 380004
(R) 079-22680300, 22680460
(M) 09327002606, 09924477723

श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा ( हालावाला ) परिवार
रतनलाल व्यापारीलालजी बोहरा
8, शाहीकुटीर, शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.
टेली. : ( 079 ) 22869300

# पूज्यश्री का कार्यक्रम

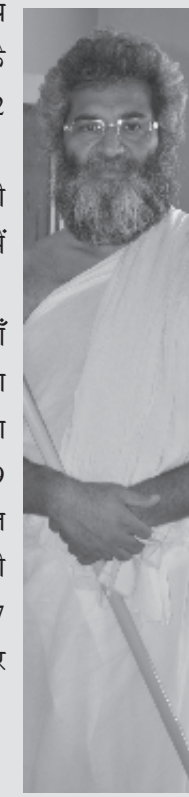

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 3 ने हुबली प्रतिष्ठा व दीक्षा समारोह की पूर्णता के पश्चात् ता. 7 दिसम्बर को विहार कर गदग, कोप्पल, हॉस्पेट, बल्लारी, चलकेरे होते हुए ता. 22 दिसम्बर को हिरियूर पधारे।

पूज्यश्री के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. हुबली से विहार कर राणीबेन्नुर, दावणगेरे, चित्रदुर्गा होते हुए ता. 22 दिसम्बर को हिरियुर पधारे। हिरियुर में पूज्यश्री आदि सभी मिले। वहाँ से सभी विहार कर सीरा, टुमकुर होते हुए बैंगलोर पधारे।

वहाँ से ईरोड की ओर विहार किया है। वे ता. 19 जनवरी को ईरोड में प्रवेश करेंगे, जहाँ जेठिया ग्रुप प्रदीपजी पारख परिवार द्वारा निर्मित विमलनाथ मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 21 जनवरी 2015 को संपन्न करवायेंगे। वहाँ से विहार कर ता. 23 को तिरपुर में प्रवेश करेंगे। जहाँ ता. 26 जनवरी 2015 को अंजनशलाका प्रतिष्ठा होगी। वहाँ से विहार कर ता. 29 जनवरी को कोयम्बतूर प्रवेश करेंगे। जहाँ श्री विजयचंदजी सौ. पारसमणि झाबक परिवार द्वारा निर्मित मंदिर दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 2 फरवरी 2015 को संपन्न करवायेंगे। वहाँ से पूज्यश्री विहार कर मदुराई, तिरूवनवेली होते हुए ता. 20 के आसपास कन्याकुमारी प्रवेश करेंगे। जहाँ ता. 27 फरवरी को मंदिर दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहाँ से पूज्यश्री चेन्नई की ओर विहार करेंगे।

**संपर्क सूत्र-**
**पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.**
C/O SANGHVI VIJAYRAJ DOSI
APANA INVESTMENT,
60 KILLARI ROAD, BANGALORE-560003 (KNTK.)
संपर्क - मुकेश- 08088210588/09784326130
विजयराज जी डोसी - 09343731869

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित
**श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित**
**श्री जिनकुशल हेम विहारधाम**

**जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।**
**आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।**
**निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार**
**संपर्क- 099784 02271, 099505 22754**

तत्त्वावबोध

15

# चतुर्भंगी का चमत्कार

मुनि श्री मनितप्रभसागरजीम.

### ११० कर्म और आयुष्य

1. मेरे कर्म अल्प पर आयुष्य ज्यादा- **अनुत्तर वैमानिक देव, आदिनाथ, माल्लिनाथ आदि।**
2. मेरे कर्म ज्यादा पर आयुष्य अल्प- **गजसुकुमाल मुनि, परमात्मा महावीर, मेतारज मुनि**
3. मेरे कर्म और आयुष्य, दोनों ज्यादा- **सातवीं नरक के जीव**
4. मेरे कर्म और आयुष्य, दोनों अल्प- **मरूदेवी माता**

### १११ पेट और पेटी

1. हम पेट भरे पर पेटी नहीं- **पूणिया श्रावक व उसकी पत्नी**
2. हम पेट नहीं पर पेटी भरे- **मम्मण सेठ**
3. हम पेट और पेटी, दोनों भरे- **जावड शाह**
4. हम पेट और पेटी, दोनों नहीं भरे- **चौविहार उपवासी साधु**

### ११२ अवगाहना- आयुष्य

1. शरीर छोटा, आयु बडी- **अनुत्तर वैमानिक देव**
2. शरीर बडा, आयु बडी- **युगलिक**
3. शरीर बडा, आयु छोटी- **अण्डगोलिक जलचर मनुष्य**
4. शरीर छोटा, आयु छोटी- **निगोद के जीव, संमूर्च्छिम मनुष्य**

### ११३ तेरा-मेरा

1. जो तेरा, वह मेरा, जो मेरा, वह भी मेरा- **दुर्योधन**
2. जो तेरा, वह तेरा, जो मेरा, वह मेरा- **युधिष्ठिर**
3. जो तेरा वह तेरा, जो मेरा, वह भी तेरा- **श्रीराम**
4. न कुछ तेरा, न कुछ मेरा- **परमात्मा महावीर**

### ११४ मोक्ष-नरक

1. मैं मोक्ष में ही जाता हूँ- **तीर्थंकर परमात्मा**
2. मैं नियमत: मोक्ष में नहीं जाता- **अभव्य, जाति भव्य**
3. मैं नरक में नहीं जाता- **अनुत्तर वैमानिक देव**
4. मैं नरक में ही जाता हूँ- **वासुदेव, प्रतिवासुदेव**

### ११५ मोक्ष-देवलोक

1. मैं मोक्ष में ही जाता हूँ- **गणधर**
2. मैं देवलोक में ही जाता हूँ- **युगलिक**
3. मैं मोक्ष में नहीं जाता हूँ- **कालसौकरिक कसाई**
4. मैं मोक्ष और देवलोक, दोनों में नहीं जाता- **तेउकाय, वायुकाय**
5. मैं मोक्ष और देवलोक, दोनों में जाता हूँ- **बलदेव, चारित्रधारी चक्रवर्ती**

### ११६ मित्र-शत्रु

1. मित्र को शत्रु माने- **धवल सेठ**
2. शत्रु को मित्र माने- **श्रीपाल**
3. मित्र को मित्र माने- **शालिभद्र, आर्द्रकुमार**
4. शत्रु को शत्रु माने- **श्रीकृष्ण**
5. शत्रु भी माने, मित्र भी माने- **श्रेणिक**

### ११७ आना-जाना

1. मैं जहाँ से आता हूँ, वापस वहाँ नहीं जाता - **चरम शरीरी जीव**
2. मैं जहाँ जाता हूँ, वहाँ से वापस नहीं आता - **सिद्ध आत्मा**
3. मैं जहाँ से आता हूँ, वहाँ वापस जाता हूँ - **चार गति के जीव**
4. मैं न तो आता हूँ, न जाता हूँ - **जाति भव्य जीव**

मुनि श्री मनितप्रभसागरजीम.

# पंचांग

# Feb. 2015

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 माघ सुदि 13 | 2 माघ सुदि 14 | 3 माघ सुदि 15 | 4 फाल्गुन वदि 1 | 5 फाल्गुन वदि 2 | 6 फाल्गुन वदि 2 | 7 फाल्गुन वदि 3 |
| 8 फाल्गुन वदि 4 | 9 फाल्गुन वदि 5 | 10 फाल्गुन वदि 6 | 11 फाल्गुन वदि 7 | 12 फाल्गुन वदि 8 | 13 फाल्गुन वदि 9 | 14 फाल्गुन वदि 10 |
| 15 फाल्गुन वदि 11 | 16 फाल्गुन वदि 12 | 17 फाल्गुन वदि 13 | 18 फाल्गुन वदि 14/30 | 19 फाल्गुन सुदि 1 | 20 फाल्गुन सुदि 2 | 21 फाल्गुन सुदि 3 |
| 22 फाल्गुन सुदि 4 | 23 फाल्गुन सुदि 5 | 24 फाल्गुन सुदि 6 | 25 फाल्गुन सुदि 7 | 26 फाल्गुन सुदि 8 | 27 फाल्गुन सुदि 9 | 28 फाल्गुन सुदि 10 |

| पर्व दिवस | | | |
|---|---|---|---|
| 02.02.2015 पाक्षिक प्रतिक्रमण | 26.02.2015 रोहिणी आराधना | फाल्गुन वदि 2 की वृद्धि |
| 18.02.2015 पाक्षिक प्रतिक्रमण | | फाल्गुन वदि 30 का क्षय |

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्री धर्मनाथ दीक्षा कल्याणक | माघ सुदि 13 | श्री श्रेयांसनाथ दीक्षा कल्याणक | फाल्गुन वदि 13 |
| जहाज मंदिर वर्षगांठ | माघ सुदि 14 | श्री वासुपूज्यस्वामी जन्म कल्याणक | फाल्गुन वदि 14 |
| श्री जिनभद्रसूरि आचार्य पद | माघ सुदि 15(1475) | श्री वासुपूज्यस्वामी दीक्षा कल्याणक | फाल्गुन वदि 30 |
| श्री सुपार्श्वनाथ केवलज्ञान कल्याणक | फाल्गुन वदि 4 | श्री जिनकुशलसूरि स्वर्गवास दिवस | फाल्गुन वदि 30(1389) |
| श्री जिनप्रबोधसूरि दीक्षा दिवस | फाल्गुन वदि 5(1297) | श्री जिनउदयसागरसूरि जन्म दिवस | फाल्गुन वदि 30(1960) |
| श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरि दीक्षा दिवस | फाल्गुन वदि 5(1976) | श्री अरनाथ च्यवन कल्याणक | फाल्गुन सुदि 2 |
| श्री सुपार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक | फाल्गुन वदि 7 | बीस विहरमान दीक्षा कल्याणक | फाल्गुन सुदि 3 |
| श्री चन्द्रप्रभजिन केवलज्ञान कल्याणक | फाल्गुन वदि 7 | श्री मल्लिनाथ च्यवन कल्याणक | फाल्गुन सुदि 4 |
| श्री जिनप्रबोधसूरि आचार्य पद | फाल्गुन वदि 8(1331) | श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरि स्वर्गवास | फाल्गुन सुदि 5(2017) |
| श्री सुविधिनाथ च्यवन कल्याणक | फाल्गुन वदि 9 | श्री हेमेन्द्रसागरजी गणाधीश पद | फाल्गुन सुदि 5(2018) |
| श्री जिनपतिसूरि दीक्षा दिवस | फाल्गुन वदि 10(1218) | श्री जिनसागरसूरि आचार्य पद | फाल्गुन सुदि 7(1674) |
| श्री आदिनाथ केवलज्ञान कल्याणक | फाल्गुन वदि 11 | श्री संभवनाथ च्यवन कल्याणक | फाल्गुन सुदि 8 |
| श्री श्रेयांसनाथ जन्म कल्याणक | फाल्गुन वदि 12 | श्री जिनकुशलसूरि दीक्षा दिवस | फाल्गुन सुदि 8(1346) |
| श्री मुनिसुव्रतस्वामी केवलज्ञान कल्याणक | फाल्गुन वदि 12 | मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि दीक्षा दिवस | फाल्गुन सुदि 9(1203) |

# प्रतिष्ठा व दीक्षा समारोह संपन्न

कर्णाटक प्रान्त के हुबली नगर में पूजनीया समुदायाध्यक्षा महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया मारवाड ज्योति साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से निर्मित श्री आदिनाथ जिन मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 5 एवं पूजनीया साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 22, पूजनीया साध्वी डॉ. श्री प्रियलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 की पावन निश्रा में संपन्न हुई।

इस अवसर पर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री हीरचन्द्रविजयजी म. आदि ठाणा 3 एवं पूज्य पंन्यास प्रवर श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा 3 की भी सानिध्यता प्राप्त हुई।

प्रतिष्ठा समारोह का प्रारंभ ता. 28 नवम्बर को पूज्य मुनि प्रवरों के प्रवेश से हुआ। उस दिन नगरों का उद्घाटन हुआ। ता. 1 को कुंभ स्थापनादि विधान संपन्न हुए।

ता. 2 को परमात्मा के च्यवन कल्याणक का विधान हुआ। तथा ता. 3 को जन्म कल्याणक संपन्न हुआ। ता. 4 को बधाई से लेकर नवलोकान्तिक देवों के आगमन तक का विधान किया गया।

ता. 5 को परमात्मा के दीक्षा कल्याणक एवं 6 मुमुक्षु बहिनों के वर्षीदान का वरघोडा संपन्न हुआ। इस शोभायात्रा ने हुबली में एक इतिहास रचा। इतनी विशाल शोभायात्रा पहली बार देखी गई। बाहर से हजारों अतिथियों का आगमन हुआ।

ता. 6 को प्रातः शुभ मुहूर्त्त में भक्तों की भारी भीड एवं आनंद के साथ परमात्मा आदिनाथ आदि जिन बिम्ब, दादा जिनकुशलसूरि आदि गुरु प्रतिमाऐं, नाकोडा भैरव आदि देव देवी प्रतिमाओं को गादीनशीन किया गया। शिखर पर ध्वजा व स्वर्णकलश चढाया गया।

अमर ध्वजा का लाभ मोकलसर निवासी श्री वाघमलजी भूराजी बाफना परिवार ने लिया।

प्रतिष्ठा के तुरंत बाद दीक्षा महोत्सव का प्रारंभ हुआ।

बैंगलोर निवासी कुमारी प्रेमा जीरावला, कुमारी सुमित्रा जीरावला, गंगावती कुमारी ममता बागरेचा, गदग निवासी कुमारी शिल्पा ओस्तवाल, हुबली निवासी प्रिन्सी कवाड, सिवाना निवासी दर्शना गोलेच्छा की भागवती दीक्षा का सामूहिक आयोजन देखने अपार भीड उमड पडी थी। यह विशेष बात है कि सभी छह दीक्षार्थी बहिनें मूलत: गढ सिवाना निवासी हैं।

दीक्षा विधि प्रारंभ करने से पूर्व दीक्षार्थी बहिनों को विजय तिलक निकाला गया। जिसका लाभ सिवाना निवासी संघवी पारसमलजी चौथमलजी वंशराजजी अशोककुमारजी प्रवीणकुमारजी भंसाली परिवार ने लिया।

पूज्यश्री ने अपने विशिष्ट अन्दाज दीक्षा का विधान करवाया। उन्होंने कहा– पंचम काल के इस सुविधाओं और भोगवादी वातावरण से परिपूर्ण समय में भी दीक्षाऐं होती हैं, यह सबसे बडा अजूबा है।

दीक्षा विधि करवाने के बाद सभी के नये नामों की घोषणा की गई। क्रमश: उनके नाम साध्वी विरलप्रभाश्रीजी, साध्वी विपुलप्रभाश्रीजी, साध्वी विरतिप्रभाश्रीजी, साध्वी विनम्रप्रभाश्रीजी, साध्वी विशुद्धप्रभाश्रीजी, साध्वी विश्रुतप्रभाश्रीजी रखे गये। सभी को पूजनीया मारवाड ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या घोषित किया गया।

इस अवसर पर साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. के 50वें संयम वर्ष प्रवेश के अवसर पर पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ने उनको कामली ओढाई।

शाम के पांच बजे तक इस दीक्षा समारोह की यह विशिष्टता थी कि लोग इतनी देर हो जाने पर भी बिराजमान रहे। इस अवसर पर पूरे भारत से भक्त गणों की उपस्थिति रही। इस दादावाडी के निर्माण में ट्रस्ट के श्री भीखचंदजी छाजेड, श्री रमेशजी बाफना, श्री पारसमलजी मांडोत, श्री पुखराज कवाड, श्री लालचंदजी टिमरेचा, श्री गौतमजी गोलेच्छा आदि का पूर्ण सहयोग रहा।

# कोप्पल में मंगल मूर्ति प्रतिष्ठा

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया साध्वी श्री प्रियलताश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियप्रेक्षांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियचैत्यांजनाश्रीजी म. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में ता. 11 दिसम्बर को श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर के शिखर में चार मंगलमूर्तियों की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। प्रतिष्ठा से पूर्व पूज्यश्री का मंगल प्रवेश हुआ। पूज्यश्री का प्रभावशाली प्रवचन हुआ। इस अवसर पर बडी संख्या में श्रावक वर्ग उपस्थित था। प्रवेश के पश्चात् श्री बाबुलालजी महावीरजी संखलेचा परिवार की ओर से अल्पाहार का आयोजन किया गया।

# हॉस्पेट में आराधना भवन का उद्घाटन संपन्न

लौह नगरी हॉस्पेट नगर में मोकलसर नगर में शा. गिरधारीलालजी शेराजी पालरेचा परिवार द्वारा निर्मित श्री पार्श्व पद्मावती आराधना भवन का उद्घाटन अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि की पावन निश्रा में कर्णाटक राज्य के राज्यपाल श्री वजुभाई वाला के हाथों ता. 12 दिसम्बर 14 को संपन्न हुआ।

उद्घाटन से पूर्व पूज्य गुरुवरों का मंगल प्रवेश करवाया गया। उद्घाटन के पश्चात् सभा का आयोजन किया गया।

पूज्यश्री ने इस अवसर पर अपने प्रवचन में कहा– समाज में परस्पर प्रेम व समन्वय की अपेक्षा है। जिस परिवार व समाज में आपसी सौहार्द्रता का वातावरण होता है, वह परिवार व समाज हर क्षेत्र में प्रगति करता है। इसके अभाव में दरिद्रता को प्राप्त करता है। उन्होंने कहा– यहाँ जिन मंदिर का निर्माण श्री बाबुलालजी पालरेचा परिवार की ओर से हुआ। और आज आराधना भवन का निर्माण भी आपके द्वारा हुआ है। यह उनकी धर्म श्रद्धा का परिचायक है।

राज्यपाल वजुभाई वाला ने कहा– जैन समाज अत्यन्त शांतिप्रिय बुद्धिजीवी समाज है। सबसे ज्यादा धनी समाज भी है तो सबसे ज्यादा दानी समाज भी है। उन्होंने जैन समाज द्वारा आम जनता के हित में किये जा रहे कार्यों की भरपूर प्रशंसा की। जैनं जयति शासनम् के नारे के साथ उन्होंने अपनी बात पूर्ण की।

इस अवसर पर बेलुर मठ के डॉ. श्री संगनबसव स्वामी, कर्णाटक मंत्री पी. टी. श्री परमेश्वर नायक ने जैन समाज के धर्म कार्यों की अनुमोदना की। जीतो अपेक्स के चेयरमेन संघवी तेजराजजी गुलेच्छा, अध्यक्ष श्री उत्कर्ष भाई शाह, श्री नरेन्द्रजी बलदोटा, श्री शांतिलालजी कवाड आदि विशिष्ट व्यक्तित्व उपस्थित थे। प्रारंभ में स्वागत भाषण श्री बाबुलालजी पालरेचा ने दिया। संचालन श्री अरविन्द कोठारी व डी.एन. सुजाथा ने किया। धन्यवाद श्री मांगीलालजी सोलंकी ने दिया। राज्यपाल श्री वाला ने मंदिर दर्शन किये। पूज्य गुरुवरों के दर्शन कर उनसे धर्म चर्चा की।

# कुमारी शिल्पा नाहर की दीक्षा 29 मई को

सिंधनूर निवासी श्री महावीरजी नाहर की सुपुत्री कुमारी शिल्पा नाहर की भागवती दीक्षा ज्येष्ठ सुदि 11 शुक्रवार ता. 29 मई 2015 को सिंधनूर नगर में होगी। परिवार की विनंती पर इस शुभ मुहूर्त्त की घोषणा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. ने बल्लारी नगर में दीक्षा महोत्सव के अवसर पर की।

यह भागवती दीक्षा पूज्यश्री के सानिध्य में संपन्न होगी। कुमारी शिल्पा पिछले 6 वर्षों से पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. सुलक्षणाश्रीजी म.सा. के सानिध्य में अध्ययन कर रही है। कुमारी शिल्पा ने चार प्रकरण, तीन भाष्य, कर्मग्रन्थ आदि का गहन अभ्यास किया है। उसके परिवार से उसकी तीन भुआजी पूर्व में दीक्षित हैं। दीक्षा सिंधनूर में होगी, इस घोषणा में सकल संघ में आनंद की लहर छा गई।

# बल्लारी में दीक्षा संपन्न

गढ सिवाना निवासी श्री मीठालालजी सौ. पुष्पादेवी बालड की सुपुत्री कुमारी शिल्पा बालड की भागवती दीक्षा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. आदि मुनि मंडल की निश्रा एवं पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. पू. श्री प्रियलताश्रीजी म. पू. श्री प्रियवंदनाश्रीजी म. पू. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. पू. श्री प्रियप्रेक्षांजनाश्रीजी म. पू. श्री प्रियश्रेयांजनाश्रीजी म. पू. श्री प्रियदर्शांजनाश्रीजी म. पू. श्री प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म. पू. श्री प्रियचैत्यांजनाश्रीजी म. की पावन सानिध्यता में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ ता. 15 दिसम्बर 2014 को संपन्न हुई।

पूज्यश्री हुबली में प्रतिष्ठा दीक्षा संपन्न करवाकर उग्र विहार कर गदग, कोप्पल, हॉस्पेट होते हुए ता. 14 दिसम्बर को बल्लारी पधारे।

दीक्षा समारोह के उपलक्ष्य में परिवार की ओर से पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया। ता. 14 को भव्य वरघोडा निकाला गया। शोभायात्रा ऐतिहासिक थी। बल्लारी में एक इतिहास बना। पूरा नगर जैसे उमड पडा था। रात्रि में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। एक आँख ऐसी न थी, जिससे आँसु न बरसे हो। विदाई समारोह का संचालन पंडित पारसभाई मुंबई वालों ने किया। ता. 15 को दीक्षा समारोह में मुमुक्षु संयम सेठिया, पं. सागरमलजी जैन शाजापुर ने अपने विचार रखे। कुमारी शिल्पा ने सभी से क्षमायाचना की।

पूज्यश्री ने रजोहरण प्रदान करते हुए दीक्षा दी। उसका नाम प्रियशैलांजनाश्रीजी रखा गया। उन्हें पूजनीया सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पू. सुलक्षणाश्रीजी म. की शिष्या घोषित किया गया।

इस अवसर पर बैंगलोर में दीक्षित साध्वी श्री प्रियचैत्यांजनाश्रीजी म. को बडी दीक्षा प्रदान की गई।

# बाडमेर से पैदल संघ का आयोजन

पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया संघ रत्ना श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की चरणाश्रिता पूजनीया डॉ. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 की पावन निश्रा में कुशल दर्शन मित्र मंडल के तत्वावधान में बाडमेर से जैसलमेर, अमरसागर, ब्रह्मसर, लौद्रवपुर हेतु छह री पालित संघ का आयोजन किया गया।

ता. 4 दिसम्बर 2014 को मंगल मुहूर्त में बाडमेर से प्रस्थान कर ता. 12 को जैसलमेर तीर्थ पहुँचा। वहाँ से अमरसागर होते हुए ब्रह्मसर दादा गुरुदेव के धाम में पहुँचा।

वहाँ सेवा पूजा भक्ति भावना आदि की संपन्नता के पश्चात् ता. 14 दिसम्बर को लौद्रवाजी पहुँचा। जहाँ संघ माला का आयोजन किया गया। संघ माला के पश्चात् ता. 15 दिसम्बर से सामूहिक अट्ठम तप का आयोजन किया गया। समस्त तपस्वियों एवं लाभार्थी परिवार का बहुमान किया गया।

# लौद्रवपुर दादावाडी की प्रतिष्ठा

श्री लौद्रवपुर तीर्थ पर स्थित प्राचीन दादावाडी का जीर्णोद्धार श्री जैन ट्रस्ट जैसलमेर के आदेश से श्री जिनदत्तसूरि मंडल, चेन्नई के तत्वावधान में चेन्नई फलोदी निवासी श्री गोपीचंदजी गणपतलालजी गोलेच्छा, श्री लालचंदजी अशोककुमारजी लोढा व नागोर निवासी श्री सोहनलालजी अजीतकुमारजी लूणावत द्वारा संपन्न करवाया गया है। इस दादावाडी की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य प्रशिष्य पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पूज्य मनीषप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में ता. 26 जनवरी 2015 को शुभ मुहूर्त में संपन्न होगी। इस अवसर पर त्रिदिवसीय परमात्म भक्ति महोत्सव आयोजित होगा।

# जिन शासन विहार सेवा ग्रुप का गठन

साधु-साध्वियों के विहार में वैयावच्च आदि की व्यवस्था के साथ असहाय एवं निशक्त जन सेवा करने के लिए प.पू. डॉ. सौम्यगुणा श्री जी म.सा. की पावन निश्रा में जिन शासन विहार सेवा ग्रुप का गठन किया गया। इस अवसर पर पूज्य महाराज श्री ने कहा कि जैसलमेर से फलौदी, बाड़मेर, नाकोडा, जोधपुर के रास्ते में सेवा के लिए जैन ट्रस्ट द्वारा संपूर्ण व्यवस्था की जाती है। लेकिन एक सेवा मंडल का गठन होने से श्रावक व श्राविकाओं में सेवा की भावना जगेगी। उन्होने कहा कि साधु साध्वियॉ संस्कृति, संस्कार व धर्म के संवाहक होते है। इस अवसर पर संयोजक पद के लिए महेन्द्र भाई बापना, व कार्यकारिणी सदस्य तरूण जिन्दाणी, अतुल जिन्दाणी, मोहनलाल बरड़िया व श्रीमती लक्ष्मी राखेचा, श्रीमती हेमलता बापना, श्रीमती चंन्द्रा डुँगरवाल, आदि सदस्य लिए गए है। इस अवसर पर बाड़मेर जिन शासन सेवा विहार ग्रुप के लुणकरण जी गोलेच्छा, भूरचंद संखलेचा, रमेशजी मालू, केवलचन्द छाजेड़, सुनील सिंघवी व मोहित लुणिया उपस्थित थे।

# जयपुर में शासन प्रभावना

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया संघ रत्ना श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर के तत्वावधान में यतिप्रवर श्री शिवजीराम जी म.सा. की 100 वीं एवं प.पू. प्रवर्तिनी श्री सज्जन श्रीजी म.सा. की 25 वीं पुण्यतिथि पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न हुये। 1दिसम्बर 2014 को जयतिहुएण महापूजन, 2 दिसम्बर 2014 को सामुहिक 1008 सामायिक एवं निवि शिवजीराम भवन जयपुर में हुई। 3 दिसम्बर 2014 को मोहनीयकर्म निवारण पूजा का कार्यक्रम मोहनबाडी गलता गेट मे सम्पन्न हुआ।

दिनांक 17 दिसम्बर 2014 बुधवार को समग्र श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर मोहनबाड़ी में भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक मनाया गया। 108 जोड़ों द्वारा इन्द्र-इन्द्राणी के रुप में भगवान का अभिषेक किया गया एवं पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजन का आयोजन किया गया।

इसके पश्चात पधारे हुए सभी भक्तों का साधर्मी वात्सल्य हुआ एवं दोपहर 2.30 बजे भगवान का भव्य वरघोड़ा जिसमें हाथी, घोड़े, ऊट, 111 वर्ष प्राचीन स्वर्ण कार्य युक्त हरिटेज रथ एवं चांदी की पालकी, विभिन्न झाकियां, जिसमें बैंड-बाजे के साथ धूम-धाम से राजशाही ठाठ से निकाला गया। इस वरघोड़े में हजारों भक्तजन पार्श्वनाथ भगवान का जयकारा करते हुए शामिल हुये।

# ओ प्राण प्यारी गुरूवर्या

जिस प्रकार निशा को सूर्य अपनी किरणो से प्रकाशित कर देता है। अंधकार के कालुष्य को उजाले की लालिमा में बदल देता है। उसी प्रकार गुरुवर्या श्रीजी ने संसार रूपी अंधेरे को अपने ज्ञान से मेरे जीवन मे संयम रूपी प्रकाश करके मेरे अंदर मे रहे अज्ञान रूपी कालुष्य को मिटा कर एक नई निलीमा की पहचान करवाई।

कितने ही दिन ढल गए, कितनी राते बीत गई, लेकिन भटकते-भटकते मुझे अपनी नैया मिल ही गई। जो मुझे इस विशाल संसार रूपी समुद्र को पार कराकर मोक्ष रूपी किनारे तक पहुँचाने मे मेरी सहायक बनी और वो नैया और कोई नही मेरी गुरूवर्या श्रीजी है। जिंदगी की भाग-दौड में जब मैं थक गई तब आपने ही अपनी छत्र-छाया में मुझे आत्मा की शांति का अनुभव करवाया।

**जिन-तत्वनुं वर्णन करी, मम जीवन परिवर्तन कर्युं**
**सानिध्य पामी आपनु, मुझ हृदयनुं पानु फर्युं**
**मुझ जीवन ना इतिहासमां, अति-भव्य आ चमत्कार छे**
**ओ प्राण प्यारी गुरूवर्या, तमने सदा नमस्कार छे**

मुझे अत्यंत हर्ष है कि आपने अपने संयम के 28 वर्ष केवल और केवल शासन को समर्पित किये और कई जीवो को जिन वाणी द्वारा परमात्मा तत्व की पहचान करवाई। माघ वदी एकम को आपका संयम दिवस, और माघ वदी दूज को आपका जन्म दिवस आता है। आपका आशीर्वाद इसी तरह मुझ पर बना रहे ताकि जल्द से जल्द मैं भी संयम पद को ग्रहण करू और अपना जीवन सफल बनाऊ।

Neelima Bhansali, Mumbai

## खरतरगच्छ जैन श्री संघ के संखलेचा अध्यक्ष व छाजेड महामंत्री बने

बाडमेर। खरतरगच्छ जैन श्री संघ की नई कार्यकारणी का गठन श्री अम्रतलाल जैन एडवोकेट की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से सम्पन्न कराया गया । खरतरगच्छ जैन श्री संघ की 3 वर्ष की नई कार्यकारणी में अध्यक्ष रतनलाल संखलेचा, उपाध्यक्ष ओमप्रकाश भन्साली, महामंत्री केवलचन्द छाजेड व कोषाध्यक्ष सम्पतराज बोथरा को सर्वसम्मति से चुना गया। सम्पूर्ण खरतरगच्छ संघ के शेष गोत्रों को ट्रस्ट मण्डल मे शामिल करने का निर्णय किया गया ।

# तीन पुस्तको का विमोचन सम्पन्न

हुबली नगर में जिनमंदिर-दादावाडी की प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा आलेखित तीन पुस्तकों का विमोचन सम्पन्न हुए। अतीव लोकप्रिय एवं उपयोगी ग्रन्थ 'जैन जीवन शैली' का विमोचन संघवी हरखचंदजी भीमाजी धाणसा, हुबली के द्वारा किया गया। यह पुस्तक का तृतीय संस्करण है।

'मधुर कहानियाँ' पुस्तक के द्वितीय संस्करण का विमोचन बाबूलालजी महावीरजी संकलेचा समदडी-कोप्पल वालो ने किया।

' प्रिय कहानियाँ' पुस्तक के द्वितीय संस्करण का विमोचन कांतिलालजी अमीचंदजी दाणी धानसा- हुबली वालों ने किया। ये तीनो पुस्तके जहाज मंदिर-माण्डवला में उपलब्ध हैं।

## COMING SOON

**सात प्रवचन-**

पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. द्वारा प्रदत्त सात प्रवचनों का संकलन प्रकाशित हो रहा है। ऐसे प्रवचन जो जीवन को सुन्दर, सरल और कलात्मक बनाये। (मूल्य-20)

**रिलीजन मेनेजमेंट-**

पूज्य मुनिवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. लिखित नये प्रवाह और नये चिन्तन से सजी रिलीजन मेनेजमेंट हर घर में रखने योग्य है। कुल 68 पेज ही यह पुस्तक विविध रंगो चित्रों में सजी है। (मूल्य- 20 रू)

**चार प्रवचन-**

पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की प्रवचन कला एवं चिन्तनधारा सर्वविदित है। इस पुस्तक में मन, समय की मूल्यवत्ता, जैन-विज्ञान और आत्मा पर दत्त मननीय चार प्रवचन सजाये गये हैं। (मूल्य- 10)

**जटाशंकर-**

पूज्य उपाध्यायश्री के प्रवचन का आकर्षक पात्र है। इससे पहले हिन्दी में जटाशंकर के तीन संस्करण आ चुके हैं। अब 'जटाशंकर' अंग्रेजी में प्रस्तुत है। इसे ट्रान्सलेट किया है नवीनजी-दिल्ली ने एवं संशोधित किया है- प्रो. श्वेता प्रेरकजी ललवाणी-मुम्बई ने। ( मूल्य- 40)

**लाईफ मेनजमेट-**

पू. मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा आलेखित अत्यन्त कलात्मक पुस्तक है- लाईफ मेनेजमेंट, जिसकी हिन्दी में 23000 प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इसी का इंग्लिश में अनुवाद करने का श्रम किया है-अंजु बरडियाजी ललवाणी-कुनूर ने तथा संशोधित किया है- प्रो. श्वेता ललवाणी-मुम्बई ने।

# कुशल वाटिका प्रतिष्ठा वर्षगांठ

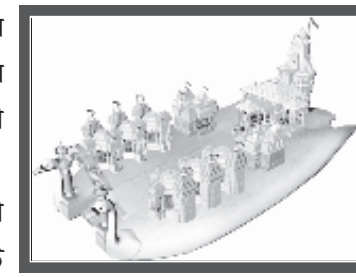

पूजनीया प्रवर्तिनी आगम ज्योति श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से निर्मित बाडमेर स्थित कुशल वाटिका में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर दादावाडी की प्रतिष्ठा की दूसरी वर्षगांठ ता. 23 जनवरी 2015 को मनाई जायेगी।

मंदिर की प्रतिष्ठा दो वर्ष पूर्व पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न हुई थी। इस आयोजन में निश्रा प्रदान करने के लिये पूज्य मुनिराज श्री ललितप्रभसागरजी म. चन्द्रप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 3 पधार रहे हैं। साथ ही पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा पधारेंगे। जिन मंदिर की मुख्य ध्वजा श्री भंवरलालजी विरदीचंदजी छाजेड परिवार हरसाणी वालों की ओर से चढाई जायेगी। कुशल वाटिका में हर शनिवार को मेला लगता है। हर शनिवार को एक हजार से अधिक लोग दर्शन व पूजा करने के लिये आते हैं। यहाँ चल रही अंग्रेजी माध्यम की स्कूल में एक हजार से अधिक छात्र संस्कारी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

विशाल छात्रावास निर्मित हो चुका है। जिसे अगले वर्ष प्रारंभ किया जायेगा।

# जहाज मंदिर की वर्षगांठ 2 फरवरी को

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के समाधि-धाम जहाज मंदिर मांडवला की प्रतिष्ठा की 15वीं वर्षगांठ माघ सुदि 14 ता. 2 फरवरी 2015 को मनाई जायेगी। सतरह भेदी पूजा के साथ ध्वजा चढाई जायेगी। पूजनीया साध्वी श्री मुक्तिप्रियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा इस समारोह को निश्रा प्रदान करेंगे। सुबह 9 बजे वरघोडा निकाला जायेगा। उसके बाद झण्डारोहण होगा। तत्पश्चात् पूज्याश्री का मंगल प्रवचन होगा। परमात्मा के अठारह अभिषेक होंगे। विजय मुहूर्त्त में ध्वजा चढाई जायेगी।

# गज मंदिर की वर्षगांठ 30 जनवरी को

केशरियाजी तीर्थ पर निर्मित अतिभव्य गज मंदिर प्रतिष्ठा की चौथी वर्षगांठ माघ सुदि 11 ता 30 जनवरी 2015 को धूमधाम से मनाई जायेगी। सांचोर मुंबई निवासी श्री पारसमलजी बोहरा परिवार की ओर से जिन मंदिर की ध्वजा चढाई जायेगी। दादावाडी की ध्वजा श्री मनोहरमलजी फूलचंदजी कानूगो सांचोर वालों की ओर से चढाई जायेगी। साथ ही 25 देवकुलिकाओं की ध्वजा भी चढाई जायेगी।

इस मंदिर का निर्माण पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न हुआ है।

*With best compliment sfrom :*

संघवी अशोक एम. भंसाली

# M.A.ENTERPRISES

*Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)*

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

# प्रत्येक पूर्णिमा को भैरव प्रसादी का आयोजन

श्री नाकोड़ा तीर्थ पूर्णिमा पदयात्रा भैरव भक्ति सेवा समिति बालोतरा द्वारा प्रतिमाह पूर्णिमा को परम तारक विश्व विख्यात श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ भगवान एवं अधिष्ठायक श्री भैरव देवजी के दर्शन हेतु श्री नाकोड़ा तीर्थ पर पैदल आने वाले दर्शनार्थियों के लिए श्री भैरव प्रसादी का प्रथम आयोजन परम भैरव भक्त श्रेष्ठीवर्य संघवी श्री पुखराजजी अमृतलालजी मोहनलालजी कटारिया सिंघवी परिवार पदमावती नगर बालोतरा (गादेवी वाले) वालो द्वारा किया गया।

उल्लेखनीय हैं कि इस समय लगभग 15 सौ से ज्यादा भैरव भक्त पदयात्री उपस्थित रहकर भैरव प्रसादी का लाभ लेते हैं। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री अमृतलालजी सिंघवी, श्री मोहनलालजी सिंघवी, श्री भंवरलालजी बागरेचा, श्री अरविन्द्रजी श्री श्रीमाल, श्री गौतमजी भंसाली, श्री ताराचंदजी कोठारी, श्री कांतिलालजी बागरेचा, श्री अशोकजी लूंकड़, श्री ललितजी श्री श्रीमाल, श्री रेवाचंदजी पटवारी, श्री पारसजी भंसाली, श्री महेन्द्रजी श्री श्रीमाल, श्री धर्मेन्द्रजी पटवारी आदि का विशेष सहयोग रहता है।

# संखलेचा भाईपा स्नेह मिलन समारोह

बाड़मेर। संखलेचा (जैन) भाईपा सम्मेलन कुशल वाटिका परिसर में आयोजित हुआ। जिसमें करीब 1600 गौत्र बंधुओं ने शिरकत की। कार्यक्रम का शुभारंभ बुजुर्गों द्वारा कुलदेवी के समक्ष दीप प्रज्जवलन कर किया गया। कार्यक्रम के क्रम में महिला संगठन की अध्यक्षा श्रीमती पिंकी संखलेचा एवं भावना संखलेचा द्वारा मंगल गीत प्रस्तुत किया गया। संस्थान अध्यक्ष श्री माँगीलाल संखलेचा द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। श्री मुकेश जैन एडवोकेट ने गौत्र के बंधुओं के शिक्षण एवं रोजगार पर विशेष महत्व दिया। इसी कड़ी में बाड़मेर विधायक श्री मेवाराम जैन, नगर परिषद सभापति श्री लूणकरण बोथरा, नवनियुक्त पार्षद सुश्री भावना संखलेचा का अभिनंदन किया गया। संखलेचा युवा संगठन के अध्यक्ष श्री अशोक संखलेचा भूणिया ने शंखवाली कुलदेवी यात्रा समिति की गठन की घोषणा की। जो संघ अप्रेल माह में प्रयाण होगा। महिला संगठन की अध्यक्षा श्रीमती पिंकी संखलेचा ने नवनियुक्त सचिव श्रीमती उषा हंसराज संखलेचा एवं उपाध्यक्ष श्रीमती सीमा सुनील संखलेचा के दायित्वों की घोषणा की। अध्यक्ष श्री माँगीलाल संखलेचा ने सभी के प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सहयोग के लिये धन्यवाद ज्ञापित किया। श्रीमती प्रीति एवं उषा संखलेचा ने भी अपनी भावनायें व्यक्त की।

**पवन संखलेचा, प्रचार मंत्री**

# सादर श्रद्धांजली

मोकलसर हॉस्पेट निवासी श्री भूरचंदजी पालरेचा की धर्मपत्नी श्रीमती शोभादेवी का ता. 15 दिसम्बर 2014 को स्वर्गवास हो गया। वे 83 वर्ष के थे। ता. 12 दिसम्बर को ही पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ने घर पधार कर मांगलिक प्रदान की थी। वे पिछले काफी दिनों से अस्वस्थ थे। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।

# मुकेशकुमार को मातृ शोक

पिछले 27 वर्षों से पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की सेवा में सेवारत मुकेशकुमार प्रजापत की माताजी सौ. श्रीमती मूली देवी का 85 वर्ष की उम्र में ता. 4 दिसम्बर 2014 को स्वर्गवास हो गया।

उनका स्वास्थ्य पिछले 15 दिनों से अस्वस्थ चल रहा था। उन्हें अंतिम आराधना के रूप में नवकार महामंत्र, गायत्री मंत्र, दादा गुरुदेव का इकतीसा, बडी शांति, सप्त स्मरण आदि के पाठ सुनाये गये।

जहाज मंदिर परिवार उन्हें हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है। दिवंगत आत्मा के लिये सद्गति की प्रार्थना करता है।

# साधु साध्वी समाचार

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. सूरत से विहार कर पालीताना पधारे हैं। वहाँ से 1 जनवरी 2015 को अहमदाबाद की ओर विहार किया है। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् राजस्थान की ओर विहार करेंगे।

पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. चौहटन बिराज रहे हैं। उनकी निश्रा में चल रहे उपधान तप का माला महोत्सव ता. 8 जनवरी 2015 को संपन्न होगा। वहाँ से विहार कर पूज्यश्री जैसलमेर होते हुए लौद्रवपुर पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में 26 जनवरी को दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहाँ से वे फलोदी की ओर विहार करेंगे। वहाँ उनकी निश्रा में 11 फरवरी को दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. मेहुलप्रभसागरजी म. सूरत पधारे हैं। वहाँ से विहार कर पालीताना पधारेंगे। उनके जनवरी के तीसरे सप्ताह के प्रारंभ में पालीताना पधारने की संभावना है।

पूज्य मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा बिलासपुर पधारे हैं। वहाँ से विहार कर खैरागढ पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 26 जनवरी 2015 को एक बालिका की भागवती दीक्षा संपन्न होगी।

पूजनीया खान्देश शिरोमणि साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. फिसल जाने से हाथ में फेक्चर हो गया। अहमदाबाद में चिकित्सा करवाई गई। वे पालीताना में शाता पूर्वक बिराज रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. पावापुरी से विहार कर राजगृही होते हुए रायपुर पधारेंगे, जहाँ 3 मार्च को विचक्षण गुरुकुल का शिलान्यास समारोह होगा। वहाँ से मालव प्रदेश की ओर विहार की संभावना है।

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा नरसिंहपुर पधारे हैं। वहाँ से विहार कर 15 जनवरी तक नागपुर पधारेंगे। वहाँ से चन्द्रपुर, वारांगल होते हुए चेन्नई की ओर पधार रहे हैं।

पूजनीया मारवाड ज्योति साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा बिराज रहे हैं। वे 15 जनवरी को विहार कर गदग, कोप्पल, हॉस्पेट होते हुए बल्लारी पधारेंगे।

पूजनीया महातपस्वी साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 ने नई दिल्ली छोटी दादावाडी से विहार कर जयपुर पधार गये हैं। मालपुरा की यात्रा कर पुनः जयपुर पधारेंगे। वहाँ मोतीडुंगरी रोड स्थित प्राचीन दादावाडी में दादा गुरुदेव की प्रतिष्ठा महोत्सव को अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे।

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा., पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ठाणा 7 मालेगांव से धूले, जलगांव, आकोला होते हुए अमरावती पधारे। जहाँ उनके प्रभावशाली प्रवचन हुए। वहाँ से भद्रावती तीर्थ की यात्रा करते हुए नागपुर पधारेंगे।

पूजनीया धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ने 26 दिसम्बर को हुबली से विहार किया है। वे दावणगेरे, चित्रदुर्गा, हिरियुर होते हुए बैंगलोर पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी मनोरंजनाश्रीजी म. सा. श्री शुभंकराश्रीजी म.सा. आदि ठाणा चौहटन बिराज रहे हैं। उपधान तप की संपन्नता के पश्चात् जैसलमेर लौद्रवाजी की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा कैवल्यधाम बिराज रहे हैं। चातुर्मास कटंगी में होगा।

पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा चौहटन बिराज रहे हैं। उपधान तप की संपन्नता के पश्चात् बाडमेर की ओर विहार करेंगे। कुशल वाटिका की वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित समारोह को निश्रा प्रदान करेंगे।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. ठाणा 4 की निश्रा में बाडमेर से लौद्रवपुर छह री पालित संघ का आयोजन हुआ। उसकी पूर्णाहुति के पश्चात् लौद्रवपुर में सामूहिक तेले का आयोजन हुआ। वहाँ से विहार कर आसपास के क्षेत्रों में धर्म प्रभावना करते हुए बाडमेर पधार रहे हैं। वहाँ से नाकोडाजी की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योति श्रीजी म.सा. विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ठाणा 3 अपनी प्रेरणा से निर्मित श्री कान्ति मणि विहार नाशिक में बिराजे। वहाँ से 27 दिसम्बर को विहार किया है। वे ता. 4 जनवरी को अहमदनगर पधारे हैं। वहाँ से विहार कर संभवत: 12 जनवरी तक सोलापुर, 16 जनवरी तक बीजापुर पहुँचेंगे। वहाँ से विहार कर हॉस्पेट होते हुए दक्षिण प्रान्त में पधारेंगे।

जयपुर में बिराजित साध्वी श्री निर्मलाश्रीजी म. सा. का स्वर्गवास दि. 8.12.2014 को हो गया। आप वयोवृद्ध थे। जहाज मंदिर परिवार की और से हार्दिक श्रद्धांजली।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.सा. ठाणा 7 बल्लारी बिराज रहे हैं। श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.सा. के पांव में तकलीफ है, इस कारण बल्लारी चिकित्सा हेतु बिराज रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 धोलका बिराज रहे हैं। उनकी निश्रा में ता. 2 फरवरी को जिन मंदिर दादावाडी की वार्जिक ध्वजा चढाई जायेगी। तत्पष्ठचात् विहार कर अहमदाबाद पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजना श्रीजी म.सा. ठाणा 3 बल्लारी से विहार कर सिंधनूर पधारे, जहाँ उनकी निश्रा में दीक्षार्थी जयादेवी, संयम सेठिया एवं शिल्पा नाहर बहुमान का भव्य वरघोडा आयोजित हुआ। वहाँ से वे विहार कर पार्श्वमणि तीर्थ पधारे हैं। वहाँ महिने भर के प्रवास के पश्चात् चेन्नई की ओर विहार होगा।

पूजनीया साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के छत्तीसगढ से राजस्थान की ओर विहार करने की संभावना है।

पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. दीपमालाश्रीजी म. जोधपुर बाडमेर भवन में स्वास्थ्य लाभ हेतु बिराज रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 उज्जैन पधारे हैं। वहाँ अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ, हासमपुरा तीर्थ आदि की यात्रा कर भोपावर की ओर विहार करेंगे। भोपावर, मोहनखेडा आदि तीर्थों की यात्रा करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. ठाणा 3 ने बैंगलोर से ता. 2 जनवरी को विहार किया है। वे तिरूपातूर, सेलम होते हुए ईरोड, तिरूपुर प्रतिष्ठा में पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री संघमित्रा श्रीजी म. ठाणा 3 कच्छ प्रदेश में विहार कर रहे है। वहाँ से जामनगर पधार कर राजस्थान की ओर विहार करेंगे।

# जहाज मंदिर पहेली-103 का सही उत्तर

**बांये से दायें-**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| (1) समय | (2) विपदा | (3) अवधि | (4) विरति | (5) कमल |
| (6) क्षपक | (7) पिपासा | (8) तन्दुल | (9) जहर | (10) हारित |
| (11) नगीना | (12) विजय | (13) मयूर | (14) मनक | (15) रजोहरण |

**ऊपर से नीचे-**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| (1) सदा | (2) विधि | (3) अति | (4) विवेक | (5) लक्ष |
| (6) कपि | (7) सात | (8) जल | (9) हार | (10) नत |
| (11) यमुना | (12) रवि | (13) कम | (14) यम | (15) प्रहर |

## पुरस्कार विजेता

### प्रथम पुरस्कार- सुशीला गोलछा, राजनांदगाँव

**छह प्रेरणा पुरस्कार**- शांतिबाई पारख-धामतरी, किशोर चौरड़िया-खापर, सुचित्रा भंसाली-नोयडा, चन्द्रप्रकाश सिसोदिया-उदयपुर, खुशबु कवाड-जयपुर, सरला गोलछा-लालबर्रा

**इनके उत्तर सही थे**- साध्वी विशालप्रभा श्रीजी-पालीताणा, साध्वी दक्षगुणा श्रीजी- पालीताणा, साध्वी मयणरेहा श्रीजी- पालीताणा, साध्वी विभांजना श्रीजी- इचलकरंजी, साध्वी निष्ठांजना श्रीजी- इचलकरंजी, निर्मला सिसोदिया-जयपुर, सीमा भंडारी-ब्यावर, शुभी गोलछा-लालबर्रा, सिद्धि गोलछा-बालाघाट, अभय गोलछा-बालाघाट, अमन भंडारी-ब्यावर, शंकरलाल शर्मा- हरेश भाई- भागीरथ शर्मा-डॉ कविता जैन-जिनल भावसार-राजुभारती, जयाबेन-पालीताणा, सुशीला जीरावला-जोधपुर, रिद्धि गोलछा- लालबर्रा, शान्ति नाहटा-जोधपुर, मधु गुलेछा-फलोदी, चन्द्रकान्ता संकलेचा-उज्जैन, सुरेश कवाड-जयपुर, सलोनी चौरडिया-खापर, शशि पामेचा-जोधपुर, सीमा जैन-जयपुर, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, मांगीलाल बोहरा-तलोदा, आरती जैन- तलोदा, जयणा जैन-तलोदा, निर्मला बच्छावत-फलोदी, किरण गोगड-दुर्ग, किरण वैद मुथा-रायपुर, माना चतुरमुथा-खरियार रोड, मनीला पारख-जयपुर, मनोहरलाल झाबख-कोटा, संगीता बुरड-ब्यावर, शकुंतला कांकरिया-हैदराबाद, नम्रता छाजेड-बूंदी, स्वाति जैन-जयपुर, कामिनी मेहता-जोधपुर, सुशीला डागा-पाली, सुषमा धारीवाल-जयपुर, दिव्या बोथरा-इचलकरंजी, संगीता लोढा-जयपुर, चेतना बच्छावत-अजमेर, सूरज मालू-रायपुर, पिस्ता गोलेछा-जयपुर, विमला गोखरू-अजमेर, डॉ. सुनीता जैन-जयपुर, सुशीला भण्डारी-कोटा, फीणीबेन बाफना-कोट्टूरू

### जहाज मंदिर पहेली 104 में सुधार

जहाज मंदिर पहेली-104 में भूलवश 1, 3, 5, आदि विषम संख्या वाले प्रश्नों में शब्द से पहले जो दो-- लगे हैं, वे शब्द के बाद जानें। उदाहरण-

1. -- शंख (गलत) 2. शंख -- (सही)

(इस भूल के कारण पहेली नं. 104 का सही उत्तर भेजने की अन्तिम तिथि, 5 फरवरी 2015,

मुनि मनितप्रभसागरजी म.

# जहाज मंदिर पहेली 105

प्रस्तुत पहेली में ग्रन्थ, आचार्य, तीर्थ आदि नाम दिये गये है।

उनके आगे या पीछे का आधा भाग (pant) निचे दिए है, शेष pant उपर कोष्ठक मे दिया गया है, उसे चुनकर लिखिये।

(BHADRA, SWAYAMBHOO, SAMMET, NANDI, VIDHI, KHANDA, ATMA, PITA, VISHESA, AVANTI, GACHCHHA, SUNDAR, PATI, MITHA PANI, SAMVEG, DITYA, STHULI, GAUTAM, BALA, VIDEH, KAHA, CHATUR)

1. CHANDAN.....BALA

2. ..... ← ..... RANGSHALA

3. SAMRA ICHCHA ..... → .....

4. ..... ← ..... BAHU

5. MAHA ..... → .....

6. ..... ← ..... RAMAN

7. DHATKI ..... → .....

8. ..... ← ..... MAS

9. INDRA BHUTI ..... → .....

10. ..... ← ..... PRABODH

11. SAMAY ..... → .....

12. ..... ← ..... SHIKHAR

13. CHULNI ..... → .....

14. ..... ← ..... SHWAR

15. BHAWAN ..... → .....

16. ..... ← ..... VASHYAK

17. PYASA KANTH ..... → .....

18. ..... ← .....SUKUMAL

19. VIKRAMA.-..... → .....

20. ..... ← ..... PRAPA

21. KHARTAR ..... → .....

22. ..... ← ..... BHADRA

**जहाज मन्दिर पहेली झेरॉक्स करके ही भरें व इस पत्ते पर भेजे →**

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा: सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन,
मुम्बई-400 004 ( महा. ) मो. 98693 48764

**नियम -**

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 फरवरी तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल मार्च में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. जहाज मन्दिर पहेली प्रेषक इस पहेली की झेरॉक्स करवाकर भेजे।
7. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
8. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

**:- पुरस्कार प्रायोजक :-**
**शा. सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया ( छबड़ा ) ब्रह्मसर हाल चैन्नई**

**प्रेषक**

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | | |

# नूतन वर्ष की महामांगलिक

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 5 एवं पूजनीया साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री तत्वज्ञलताश्रीजी म. पू. साध्वी श्री संयमलताश्रीजी म. ठाणा 3 की पावन निश्रा में अंग्रेजी सन् 2015 के नूतन वर्ष प्रवेश पर बैंगलोर विजयनगर अर्हम् भवन में महामांगलिक का आयोजन किया गया।

यह आयोजन संघमाता श्रीमती इचरजबाई चंपालालजी डोसी परिवार खजवाणा वालों की ओर से किया गया। विजयनगर मंदिर से पूज्यश्री का नगर प्रवेश करवाया गया। श्री डोसी परिवार ने दीपकों व चामरों से नृत्य के साथ बधाया। मिलिट्री बेंड द्वारा सलामी दी गई।

मंगलाचरण के पश्चात् डोसी परिवार द्वारा पूज्यश्री के चरणों का दुग्ध व जल से पक्षाल किया गया। रजतमुद्राओं से गुरुपूजन किया गया। पगले करवाये गये।

पूज्य गुरुदेवश्री ने अपने प्रवचन में फरमाया- भारतीय संस्कृति के अनुसार तो नया वर्ष दीपावली या गुडी पडवा को होता है। यह तो अंग्रेजी सन् के अनुसार नया वर्ष है। पर हर सूर्योदय नये वर्ष का प्रारंभ है, इस आधार पर आज नया वर्ष कहा जा सकता है। अंग्रेजी तारीखों की सुविधा के कारण लोगों को तिथि का पता नहीं होता, पर तारीख का पता होता है।

उन्होंने कहा- हमारे अन्तर में संवेदना का प्रादुर्भाव होना चाहिये। यही नये वर्ष का संकल्प है। परिवार के प्रति संवेदना, शासन के प्रति संवेदना, जीवन के प्रति संवेदना! जो व्यक्ति संवेदना समझ लेता है, वह व्यक्ति अपने स्वभाव, भाषा, विचार या आचार आदि से कभी भी दूसरों को कष्ट नहीं दे सकता। वह करूणा से परिपूर्ण हो उठता है।

पूज्यश्री ने संघवी श्री विजयराजजी डोसी की गुरुभक्ति व शासन गच्छ प्रेम की अनुमोदना करते हुए कहा- पूर्व में श्री डोसीजी ने उपधान तप कराया, छह री पालित संघ निकाला! शासन के कई विशिष्ट कार्य किये। श्री डोसीजी की आत्मीयता, उनके पूरे परिवार की श्रद्धा अपने आप में एक उदाहरण है।

पूज्यश्री के प्रवचन व मांगलिक श्रवण करने के लिये आज नगर उमड पडा था। अर्हम् भवन का विशाल हॉल खचाखच भरा था। इस अवसर पर चेन्नई से आये मुमुक्षु जयादेवी सेठिया एवं मुमुक्षु संयमकुमार सेठिया का डोसी परिवार की ओर से स्वर्ण श्रृंखला द्वारा बहुमान किया गया। मुंबई, अहमदाबाद, रायपुर, इचलकरंजी, चेन्नई, ईरोड, तिरूप्पुर, तिरूपात्तूर आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में अतिथि पधारे। जिनका श्री डोसी परिवार की की ओर से बहुमान किया गया। श्री श्रेणिक नाहर, सौरभ डोसी ने अपने गुरु भक्ति गीतों से उपस्थित जनसमूह को झूमने पर मजबूर कर दिया। संचालन विनोद आचार्य ने किया।

## पूज्यश्री का आगामी चातुर्मास रायपुर छत्तीसगढ में होगा

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का आगामी चातुर्मास रायपुर छत्तीसगढ में होगा। बैंगलोर नगर में बसवनगुडी दादावाडी में ता. 4 जनवरी 2015 को पूज्यश्री ने अपने चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की। उन्होंने कहा- रायपुर संघ की विनंती वर्षों से चल रही है। इस वर्ष विहार लम्बे होने पर भी द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आदि की जयणा के साथ चातुर्मास रायपुर में करने का भाव है।

घोषणा से पूर्व रायपुर संघ की ओर से भावभीनी विनंती की गई। पूज्यश्री की इस घोषणा से न केवल रायपुर में अपितु संपूर्ण छत्तीसगढ में आनंद की लहर फैल गई है। पूज्यश्री अपने साधु साध्वी मंडल के साथ ता. 25 जुलाई 2015 को चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश करेंगे।

# जटाशंकर

जटाशंकर को शराब की लत लग गई थी। पूरा परिवार उससे परेशान था। पर जटाशंकर समझने पर भी उसका त्याग नहीं कर पाता था। जब घर के वातावरण में उसका ज्यादा ही तिरस्कार होने लगा तो उसने चोरी छिपे शराब पीनी शुरू कर दी।

एक रात वह शराब पीकर आ रहा था। नशे में लहराता हुआ चल रहा था। रास्ते में बिजली के थंभे से टकरा गया। उसके चेहरे पर खरोंचे आ गई। वह विचार करने लगा- सुबह परिवार वाले जब चेहरा देखेंगे तो समझ जायेंगे कि यह शराब के नशे में टकराया है। तो मैं इलाज कर देता हूँ। दवाई लगा लेता हूँ। पट्टी चिपका देता हूँ! दवाई इस बात का प्रमाण होगी कि नशा नहीं किया है। अन्यथा दवाई कैसे लगाता!

वह धीरे से अपने कमरे में गया और दर्पण के सामने खडे होकर दवाई लगा दी। उस पर रूई का फोहा रख कर पट्टी चिपका दी। बडे आराम से सो गया। सुबह परिवार वालों ने उसे जगा कर कहा- शराब पीकर आये थे! वह घबरा गया। वह विचार में पड गया। परिवार वालों को पता कैसे चला! उसने इन्कार करते हुए कहा- नहीं तो!

- तो यह चेहरे पर क्या हुआ है!

- यह तो कल वापस आते समय केले के छिलके पर पांव पड गया था। इस कारण फिसल पडा। चेहरे पर थोडी खरोंचे आ गई थी। रात सोने से पहले दवाई लगा कर पट्टी चिपका दी थी।

उसकी पत्नी ने जटाशंकर का कान पकडा और दर्पण के सामने ले जाकर कहा- देख अपना चेहरा! घाव चेहरे पर है और मरहम पट्टी दर्पण पर लगा रखी है।

अब बोल/! शराब पी थी या नहीं?

जटाशंकर को स्वीकार करना ही पडा।

**नशे में आदमी को होश नहीं रहता। उसे इलाज खुद का करना चाहिये पर दर्पण का करने लग जाता है। ऐसे ही अहंकार आदमी को होश में नहीं रहने देता। बीमार स्वयं है, पर उसे सदा दूसरा बीमार नजर आता है। दूसरों का इलाज करने में उसे रस है। पर इससे खुद ठीक नहीं हो सकता। अपना इलाज करने से ही स्वस्थता प्राप्त हो सकती है।**

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

# हॉस्पेट आराधना भवन उद्घाटन की झलकियाँ

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

।। श्री विमलनाथाय नमः।।
।। दादा गुरूदेव श्री जिनकुशलसूरि सद्गुरूभ्यो नमः।।
।। गणनायक श्री सुखसागरसद्गुरूभ्यो नमः।।

# ईरोड (तमिल नाडू) नगरे

हमारे परिवार द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित

## श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी

## अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे संकल श्रीसंघ को स्नेह आमंत्रण

आशीर्वाद
पूज्य गुरूदेव आचार्य
श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

पावन निश्रा
पूज्य गुरूदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
आदि ठाणा

दिव्याशीष
पूज्या प्रवर्त्तिनी महोदया श्री विचक्षणश्रीजी म.
छत्तीसगढ़ शिरोमणि महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म.

प्रेरणादात्री
पू. प्रखर व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म.
पू. बहिन म. विदुषी साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म

मार्गदर्शन - शासनरत्न मनोजकुमार बाबुमलजी हरण सिरोही (राज.)

### मांगलिक कार्यक्रम

| परमात्मा व गुरूदेव का प्रवेश | अंजनशलाका | भव्य प्रतिष्ठा |
|---|---|---|
| सह वरघोड़ा | मंगलवार | बुधवार |
| सोमवार ता. 19.01.2015 | ता. 20.01.2015 | ता. 21.01.2015 |

निमंत्रक

**श्रीमती विमलादेवी जवाहरलाल**
**श्रीमती कंचनदेवी प्रदीपकुमार**
**श्रीमती अंकितादेवी शरदकुमार**
**पारख परिवार, लोहावट-राजीम-ईरोड़**

शुभ स्थल
श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय एवं
श्री जिनकुशल सूरि दादावाडी
101, वलयकार स्ट्रीट, ईरोड़ 638001 (त. ना.)
संपर्क - 9366681001, 9360181001

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. चू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. चू. सी. जैन
www.jahajmandir.org



शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408